श्री
ब्र.सं.
१-१

रकोपकीयोहे ॥ औरकहतिहेजोमेंकन्हेंयाकोलेकेन्या
रीरहूंगी ॥ यहसुनिकेंश्रीनंदरायजी कहेजोयाकंन्हे
याकोंतोमेंराषूंगोवहतोतनकमाखनकेलियेंबांध
तहें ॥ सुषंनमेरेघरतेंआजुहीन्यारीहोउ ॥ याप्रकार
श्रीनंदरायजीनानाप्रकारकेवचनकहेनलागे ॥ तबम
धुमंगलनेंश्रीनंदरायजीकेकानमेंकह्यो अबव्रज
मेंतुम्हारोनामनाहीजपोसगरेव्रजवासीयहजान
तहें ॥ जोश्रीनंदरायजीसोंऔरश्रीयसोदाजीसोंपर
स्परसनेंहहे ॥ कबहूंविरोधकीबातसुनीनाहीहे ॥ औ
तेंहूंतोतुम्हारेघरकोब्राह्मनहोंतातेतुम्हारेभलोचा
हतहों ॥ तुम्हारोभलोहोइसोबाततोकहुंगो ॥ श्री
यसोदाजीहोरीके झाड पासवेठीहें ॥ सोउनसोंऊहां
कछूबोलियोमतिंऔर बालकोंजाइकेंभुजापकरिकेंअ
पनेंघरलेचलो इहांकछूबोलियोमतिही ॥ यहबा
तमधुमंगलकीसुनिश्रीनंदरायजीबहुतसराहना
करिकहेजोमधुमंगलतूपरमचतुरहे ॥ औरहमारे

घरकोहे ॥ तातेंवेगिचालिजेसेतूंकहेगोतेसेंकरेंगे ॥ याप्र
कारमधुमंगलऔरश्रीनंदरायजीहोरीकेझाडपास
आए ॥ तबकीरतजीहुतीसोपीछेंफिरकेंश्रीनंदराय
जीकोंहाथजोरेरहामतिआवो ॥ याछेंकीरतजीनेंम
नमेंसंदेहकरयोजोआजुश्रीनंदरायजीयावरहेगयेहें ॥
कहितजोमेरानिकस्आवतहें ॥ तबमधुमंगलनेंश्रीनं
दरायजीसोंकह्योरषोजसोदाजीतुमकोंदेषिकें ॥ हा
याकरायकेंकहतिहेंजोइहांतुममतिआवोमेरेंन्यारी
रहूंगी ॥ तबश्रीनंदरायजीऔरहूवेगिचले ॥ तबकीर
तजीचारोंओरचाहरिलपेटिकेंलाजकरिकेंबेठिगई
इतनेंमेंश्रीनंदरायजीकीरतजीकीभुजापकरिकेंउ
गइलीयो ॥ तबकीरतजीडरायिकेंभुजाछुडावनलागी
तबश्रीनंदरायजीकीरतजीकीदोनोंभुजापकरिकेंउग
इकेंगाढीकरिलीये ॥ औरकहेजोकहातिहारीबराब
रीमेरेमेंबलनाहीहें ॥ याप्रकारश्रीनंदरायजीकीरतजी
कांपेचतहें ॥ औरकीरतजीमारउरकेंकांपतहें ॥ मनमेंक

[illegible]
ब्र.सं.
९-२

हितिहें आजुनंदरायजीवावेरहेगएहेंकहा॥ मेरपीछें
क्योंपरतहें॥ इहांसखीननेंश्रीयसोदाजीकोंओरह
रखभानजीकोंषोवीमलाइकेंगांवजोरी॥ सोश्रीहरष
भानजीतापतरेसूक्षमअंगहें॥ ओरश्रीयसोदाजी
भारीवहुतपुष्टिहें॥ ओरवलवहुतहें॥ सोज्योंज्यों
श्रीयसोदाजीचलेंत्योंत्योंश्रीहरखभानजीआपुही
तेंचलेंआवें॥ याप्रकारश्रीहरखभानजीकोंओरश्री
यसोदाजीकोंश्रीस्वामिनीजीदेखिकें श्रीठाकुर[illegible]जी
सोंकहीजो॥ तुमअपनीमेंयासोंकहो[illegible]पताइ
वराविचाराताकेपीछेक्योंपरीहें॥ [illegible]अपनीमें
याकोंवरजोतोसही॥ उनकोंरंचकहूलाज[illegible]नाही॥ [illegible]
तिकही॥ तवश्रीठाकुरजीहासिकेंकहेजोहारी[illegible]जोडपा
सअपनीसेंयाकोंतूमंहूदेखो॥ तवश्रीयसोदाजीनें
हूदेख्यो॥ ओरश्रीस्वामिनीजीनेंहूदेख्यो॥ ओरश्री
यसोदाजीप्रसंनहोइश्रीहरखभानजीकीभुजापक
रिहोरीकेंडाडेंपासलेआई॥ तवमधुमंगलसखानें

कीरतजीकीओरश्रीनंदरायजीकीगांविजोरीदई॥ त
वश्रीनंदरायजीश्रीयसोदाजीकोंश्रीहरखभानजीकेनि
करदेषें॥ सोश्रीनंदरायजीमधुमंगलसोंकहेंजोजसो
दाजीतोश्रीहरषभानजीकेनिकरहें॥ तूमोंकोंभुलाइकें
किनकेंपासलायोहे॥ यहकोनकीइस्त्रीसोंगांविजोरीहे॥
तवमधुमंगलनेंकह्योजोसुनोंश्रीनंदरायजीजवश्री
यसोदाजीकोंपकरिकेंसखीननेंश्रीहरखभानजीसों
गांवजोरी॥ तवमेंजांनीमेरेंश्रीनंदयसोदाजीकीहां
सीहोइगी॥ तवमेंइतनोछलकरिकेंहरखभानजीकीव
हूकीरतजीहें॥ तिनसोंगांवजोरीहेंकाहेतेंमेंतुम्हारेंघरकों
ब्राह्मनहों॥ तातेंतुम्हारेंघरकोभलोमोकोंकीयोचाहि
पें॥ यहसुनिकेंश्रीनंदरायजीमधुमंगलऊपरवहुतप्र
संनभए॥ पाछेंश्रीनंदरायजीप्रेममगनहोइकें॥
हाथजोरिकें॥ श्रीहरखभानजीसोंविनतीकीएजोआ
जहोरीकेदिनमेंअपराधमेरोछिमाकरियो॥ तातेंआ
जुपलयाकरो॥ यहमेरेंकन्हेयापुत्रकीमाताकोंतुमध

होरी रलेजाउ ॥ औरकीरतजीकोंहमारेघरपठायदेहु ॥ यह
१-३ सुनिकेसबव्रजवासीहंसे तबश्रीव्रखभानजीहूहोरी
षेलमेंमगनहोइकें श्रीनंदरायजीसोंकहेजोवहोत
आछीबाततिहें ॥ हमइनश्रीयसोदाजीकेसंगश्री
कृष्णकोंहूराषेंगे ॥ तबश्रीनंदरायजीहूप्रेमआनंद
पाइकेंकहेजोकीरतजीकीवेटीश्रीराधाजीहें ॥ तिन
कूंहमराषेंगे ॥ यहसुनिकेश्रीव्रखभानजीकहेवहुत
आछीकही ॥ औरकीरतजीयहसुनिसांचीमानिके
डरापिकेंकही जोइहांऐसीभीरमेंश्रीनंदरायजीनें मे
रीभुजामरोरीहेसोमेंइनकेघरकेसेंरहुंगीयाभां
तिमनमेंडरापिकेंलाजछोडिकेंकहीजोमेंश्रीनंद
रायजीकेघरमेंकवहूंनरहोंगी ॥ मेरीभुजाअव
हीमरोरीहे ॥ यहसुनिकेंसबव्रजवासीहंसे ॥ तबश्री
नंदरायजीहांसिकेंकीरतजीसोंकहे ॥ जोतुमडरपोजि
नितुमकोंघरमेंआछीभांतिराषेंगे ॥ यहसुनि
केंकीरतजीनेंलाजपाइकेंफेरकिहीजोअवमेंश्रीनं

दरायजीसोंकोनभांतिवचोंगी ॥ तबश्रीयसोदाजीनेंकीर
तजीसोंकही जोमेंतोश्रीव्रखभानजीसोंनाहीडरपों ॥ तु
मक्योंनंदरायजीसोंडरपतिहो ॥ तबकीरतजीनेंकहीजो
तुमकाहेकोंडरपो ॥ मेरीराधाकेपितामेंरंचहूबलनाही
हे ॥ अतिसूक्षमअंगहे ॥ तातेंमेरीराधाकोपितातुम
होंतेडरपतहो ॥ तातेंतुमडरपतिनाहीं ॥ औरमेरोसरी
रअतिसूक्षमहे ॥ सोमेंडरपतिहों ॥ जोमतिकहूंश्रीनं
दरायजीमेरोप्रानलेइ ॥ अवहीतेंमेरीभुजामरोरीहे ॥ ता
तेंमेंश्रीनंदरायजीकेघरकवहूंनजाऊंगी ॥ यहसुनिकें
सबव्रजवासीहंसे ॥ औरश्रीनंदरायजीहंसे ॥ औरकीरत
जीकीभुजापकरहतेसोढीलीकरी ॥ तबकीरतजीभुजा
छुडाइकेंभाजिकेंदूरिजाइठाडीभइ ॥ तबअत्यंतहीस
वहंसे ॥ याप्रकारहोरीडांडोरोपनकोषेलभयो ॥ डांडोरो
पसूंअलोकिकव्याहकेसूचनकहे ॥ पाछेंललिताजीनें
श्रीरेवतीजीश्रीवलदेवजीवहूरंचइदूरिठाढीहूती ॥ सोव
हहोरीकेकौतिकदेषिदेषिकेंहंसतिहुती ॥ सोजहांलालि
अथहोरीकोआवरे

ताजी जाइ श्रीरेवतीजी सों कही जो तुमकों श्रीयसोदाजी
बुलावति हैं ॥ कहति हैं जो रेवो श्रीबलदेवजी की वहू मोकों
पा लागन करन हूं नांही आई ॥ ऐसी निठुरानी [illegible] लजहो
इ के वागी है ॥ सो यह राजा की बेटी है ॥ सो याके हृदय में अ
भिमान है ॥ या प्रकार ललिताजी ने श्रीरेवती सों कही
तब श्रीरेवतीजी ने कही जो मोकों अभिमान तो नांही है ॥
यह डरपति हों जो जैसें श्रीयसोदाजी की और श्रीनंदरा
यजी की गारि जोरी है ॥ तैसें मतिक हूं मेरी हूं जोरी ॥ [illegible]
कहा करों ॥ मोकों तो अलाज बहुत री लागति है ॥ तब ल
लिताजी ने कही जो तुम या बात को संदेह [illegible] मति करो ॥ ऐ
सी सामर्थ्य काकी है ॥ जो तुमसों हांसी करेगो ॥ यतो ब्रज
वासी अहीर हैं सो आपुस में हांसी करत हैं ॥ और तुम तो
बडे राजा की बेटी हो ॥ दूसरें श्रीबलदेवजी की वहू हे ॥ सो
श्रीबलदेवजी के क्रोधकों सब जानत हैं ॥ तातें तुमतें
हांसी कोन करेगो ॥ और मैं तो तुम्हारे संग हूं सो काहू कों
हांसी न करन देहुंगी ॥ या प्रकार ललिताजी ने कही तब

श्रीरेवतीजी आछी भांति चादर ओढिके श्रीललिताजी
के संग चली ॥ यहां मधुमंगल हतो सो बडे सबनंद उपनंद
हें ॥ तिनके कान में कह्यो ॥ हे बाबाजी तुम्हारे घर की डोकरी
हे जा मांहे सो ढूंढता फिरत हें ॥ तुम्हारे लीये एक सामग्री
लाई है ॥ सो सबन में सगरे री ढूंढ्यो यह विचारिके आई
जो उपनंद [illegible] ॥ उनकों भूख लागी होइगी ॥ तातें तुमकों
बहुत [illegible] है ॥ तातें उह डोकरी कों श्रम बहुत भयो है ॥ सो
वनमें ललिताजी कों मिली ॥ सो ललिताजी लिवाइ लाई
हैं ॥ तातें अब इतनी दूरि चलो तो तुम आछें ॥ तब उपनंद ने
कही क्या मोकों तो भूख बोहोत लागी है ॥ तातें मोकों कछू
सुरत नांही हमें कों नमस्कार चलो ॥ तब मधुमंगल ने कही
चलो मैं लिवाइ ले चलों ॥ तब उपनंद मधुमंगल कों कांधे
पै करिके चले ॥ तब मधुमंगल समुझावत हैं ॥ सुनो बाबा
जी वा डोकरी के पास सामग्री है ॥ सो मैं मांग्यो सो मोकों
दीनी नांही ॥ तातें मैं तुमकों डोकरी के हाथ पकराय देहुंगो
सो वाकी [illegible] कों आखम तें सामग्री तुम लीजो ॥ तब उपनं

होरी- दनेंकहीतुमोंकोंडोकरीसोंमिलाइदेऊमेंजोकरीसोंसा
१-५ मिग्रीलेलेऊगो॥ ऐसोडोकरीमेंकहासामर्थहेजोसा
मिग्रीनदेइगी॥ याप्रकारमधुमंगलसखाउपनंद
कोश्रीरेवतीजीकेपासलेआयो॥ तबघूंघटमारेंदोषिकें
उपनंदनेंकह्योजोडोकरीबावरीजोकरीतेरस्वेतपारहेग
येहें॥ दांतटूटिगयेहें॥ तोहूतेनेंइतनोवडोघूंघटमारनों
नांहीछोड्योमोकोंदूषवहुतलागीहे॥ तातेंमोकोंसा
मिग्रीदे॥ अबतूकहांवहवेटीकीनांहीलाजकरितहे॥ तब
श्रीरेवतीजीआपनेमनमेंडरपीजोयहकोंनहेंरीनिकट
बोलतहे॥ तबमधुमंगलनेंकहीजोडोकरीबूढीहोगी
फिरीहे॥ तातेंयाकोंसरीरकीसुधिनांहीं॥ तातेंयाकों
तुमपूछोमति॥ याकीकांखमेंसामिग्रीहेसोलेलेहु
तबउपनंदजीकहेंवेयाकोहाथतूमोहिपकराइदे॥ त
बललिताजीनेंश्रीरेवतीजीकोहाथउपनंदकोंपकराय
केंकहीजोउपनंदजीतुम्हारीडोकरीअमकरमांदीहो
रगईहे॥ हाथआछोगाढोपकरियो॥ तबउपनंदनेंव

हुतहीगाढोहाथपकर्यो॥ तबश्रीरेवतीजीनेंकहीजोए
सोकठिनहस्तकोंनकोहे॥ तबरंचकहूंघूंघटमेंतेदेख्यो
सोउपनंदकीडाढीस्वेतदेखिकेंकहीजोयहकोंनहें॥ पा
छेंलाजितासोंश्रीरेवतीजीनेंकह्योजोललितातुममो
सोंछलकीयो॥ मोकोंवहुतदुखदीयो॥ मेरीलाजषो
ई॥ तबललिताजीनेंकहीचिंतामतिकरो॥ होरीकेदिनहें॥
बालोबोली॥ तबश्रीरेवतीजीवहुतलजापाइछुडाइबेको
वहुतबलकरे॥ सोउपनंदनेंबहुतगाढेपकर्योसोछूटे
नांही॥ उपनंदजीकहेबावरीडोकरीकहांतेरीहूंबराबर
मोमेंबलनांहीहेसोतूहाथछुडावतहे॥ तबउंललिताने
उपनंदकोउपरनालेकेंश्रीरेवतीजीकीसाडीसोंगांठजो
री॥ तबउपनंदसामिग्रीकेलीयेंकांखमेंहाथडारन ला
ग्यो॥ तबगोपीग्वालसबश्रीठाकुरजीश्रीस्वामिनीजी
साहितहंसें॥ पाछेंश्रीठाकुरजीश्रीबलदेवजीसोंकहे॥ जो
दाऊजीतुमआपनीवहकोंदेखो॥ उपनंदबिचाराडोक
राकेपीछेंपरीहे॥ औरउपनंदहूंहांसीकरतहें॥ सो

होरी १०६

यहतुम्हारीहांसीहोतिहे॥ तबयहसुंनिकेंश्रीबलदे
वजीउपनंदकेपासआइ॥ आपनीवहूंसोंतोसबके
आगेलाजकरिकेंकछूनबोले॥ औरक्रोधकरिकें॥ उ
पनंदसोंकहेजोउपनंदतूहधसबमेंबडोकहावतहे॥
तातेंतोकोंछोडतहोंनाहीतोमारतो॥ पराईवहूबेटी
सोंहांसीक्योंकरीये॥ याप्रकारश्रीबलदेवजीनेंउपनं
दकोंडरपायो॥ तबउपनंदमारेंडरकेंकांपकेंबोल्यो
सोजोश्रीबलदेवजी तुममेरेंऊपरक्रोधक्योंकरतहो॥
यहतोमेरीठाकुरानीहे सोकहाजांनियेंआजुयाकोंकहा
भयोहे॥ तबललितानेंश्रीबलदेवजीसोंकह्योजोतु
मउपनंदकेंऊपरइतनोक्रोधक्योंकरतहो॥ यहजोवा
रीउपनंदकीवहूहे॥ सोउपनंदकोंअबबहुतलगीहे॥
तातेंइनकेपाससांमिग्रीमांगतहें॥ इतनेमेंमधुमं
गलनेंश्रीबलदेवजीसोंकह्योजोमेंजांनतहोंतुमसों
श्रीकृष्णनेंकह्योहोइगोसोदाऊजीतुम। श्रीकृष्ण
केवचनमनलेसांचमांनतहो॥ यहतोलराईकराव

क्रो

तहे॥ तातेंयहठाकुरानीतोउपनंदकीवहूहे॥ तुमउपनंदसों
क्रोधक्योंकरतहो॥ याप्रकारमधुमंगलनेंश्रीबलदेवजी
सोंकह्यो॥ तबश्रीबलदेवजीनेंउपनंदसोंकह्योजोपावजी
तुममेंयेअपराधाछिमांकरोमेंजांन्योनांहीजोठाकुरी
तुम्हारीवहूहे॥ श्रीकृष्णमोसोंतुमसोंलराईकरावत
हे॥ यहश्रीबलदेवजीकेसुधवचनसुनिकेंसबव्रजवासी
हंसे॥ औरश्रीरेवतीजीललितासोंरिसाइकेंकहीजोतें
मेरीलाजउतारीहे॥ पाछेंउपनंदश्रीरेवतीजीकीरजा
पाइकेंश्रीयसोदाजीकेपासलेजाइकेंकह्योजो॥ श्री
यसोदाजीतुममेरीठाकुरानीकोंसमुझावोमोकोंअबब
हुतलागीहे॥ सोयहमोकोंसांमिग्रीनांहीदेतहें॥ तब
यहसुनिकेंश्रीयसोदाजीघूंघवालीकेंदेखेंतोश्रीरेव
तीजीहे॥ तबश्रीरेवतीजीनेंलजितहोइकेंकहीजोयह
उपनंदनेंमोकोंबहुतदुखदीएहे॥ तबश्रीयसोदाजीनें
उपनंदसोंकह्योजोतुमसबनतेंबडेहोइकेंऐसेबावरे
हेगएहो॥ यहतोश्रीबलदेवजीकीवहूहे॥ यहसुनिउपनं

होरी रतजापाइकेंकह्योजोमेंनांहींजान्योमोकोंमधुमंग
१०७ लकूंवेंहीरतनीमेरीहांसीकराईहे॥तबश्रीठकुरजी
श्रीबलदेवजीसोंकहेजोतुममेरोकह्योनांहीमान्योउ
लटोमेरोकोंरूंगकीयो॥सोदेषोतोतुम्हारीबहूनिकसी
केनांहीं॥तबश्रीबलदेवजीस्वरूपहोइक्रोधमेंबो
लेजोश्रीकृष्णअबतूयासमेंबोलेमतिअबतोमेरी
लाजजाइगी॥पहलेंतोतुमहूंनांहींकरतहो॥अबमें
कहाकरों॥तातेंअबहीतूमोसोंमबोलेमति॥याप्रका
श्रीबलदेवजीकहिकेंपाछेंश्रीदामाकीगोदमेंमांथो
धरिकेंअपनोंमुखकमलअपनेंउपरनाकूंढांकिकेंपोढे
रतनेमेंमधुमंगलसखाहोसोश्रीनंदरायजीकेघरआ
यो॥सोश्रीरोहनीजीतहांसगरीसामिग्रीसिधकरि
केंश्रीयसोदाजीकोमारगजोवतिहीजोअबजोश्री
ठकुरजीसहितपधारेंतोआरोगाइये॥तबम
धुमंगलनेंकह्योजोतुमकोंश्रीयसोदाजीबेगिबु
लावतिहें॥आजुउत्थापनसोंनभोगपर्यंतवहांहीं

होइगो तातेंबेगीचलो॥याप्रकारमधुमंगलनेंकह्यो॥
तबश्रीरोहनीजीनेंकहीजोमेंतोसबसामिग्रीसिधक
रराषीहे॥अबकेसेंकरों॥तबमधुमंगलनेंकह्योएकब
डीगागरिबांधिकेंमोकोंदेहु॥मेंलेचलूंऔरतुममेरेसंग
चलो॥सोरोहनीजीएकबडीगागरिबांधिकेंमधुमंगल
कोंदेहीजोयामेंसामिग्रीबहुतआरीहे॥सोकोंनप्रकारसब
लगी॥तबमधुमंगलनेंश्रीकृष्णकोंसुमिरनकरिकेंलक
रके॥माथेपेंगागरिउठाइलेकेंश्रीरोहनीजीसोंकह्योजो
बेगिचलोश्रीयसोदाजीउहांबेगीहें॥पहलेंनिकेंश्रीरो
हिनीजीआभूषनबस्त्रपहरकेंचादरओढिकेंऊपर
तेंआछ्योघूंघटमारकेंचलीं॥इतनेमेंघरकेंबाहरश्री
वृंदावनमेंसंकेतकेआसपासजबआईतबश्रीस्वामि
नीजीनेंदेषी॥सोश्रीललिताजीसोंऔरश्रीचंद्रावली
जीसोंकहीजोतुमतोपरमचतुरहोश्रीरोहिनीजीआव
तिहें॥सोइनहूंकीहांसीकरीचाहिए॥तबयहश्रीस्वा
मिनीजीकीआग्यामानिकेंश्रीललिताचंद्रावलीजी

नेंदूरि तेंश्रीरोहिनीजीकोंघोरिअबीरगुलालकोअं
धियारी करिदीनी ॥ इतनेंहीमें कीरतजीनेंललिता
सोंकहीजोतू मेरी सखीहोइकें मोकोंश्रीनंदरायजीसों
नांहीं बचावतिहीं ॥ तातेंतूमोंकोंएकांतमें रषताइहे
केंपाछेंतूइहांषेलनकोंआइयो ॥ मोकोंश्रीनंदरा
यजीसोंडरलाग्योहे ॥ औरश्रमहूबहुतभयोहे ॥ प
हसुनिकेंश्रीललिताजीनेंश्रीकीरतजीसोंकहीजो
तुममेरीनिकुंजमंदिरहे तहांचलो ॥ उहांऐसी[illegible]
सघनहें ॥ सोकोइजांनतनांहीं ॥ तबकीरत[illegible]लालि
ताकेपायनपरनलागीजोवेगिहीं[illegible]चलो ॥ त
बललिताजीनेंश्रीस्वामिनीजीसोंआइ[illegible]बाल
सोंकहीजोतुमश्रीरोहिनीजीकेघरेंरहियो ॥ मेंश्री
कीरतजीकोंएकांतमेंआगारिआवतिहों ॥ ऐसेंश्रीललि
ताजीकहिश्रीकीरतजीकोंसंगलेकेंअपनेंनिकुंज
मेंलेजाइकेंकहीजोतुमश्रीयसोदाजीकोभेषध
रिकेंयहांपोढिरहोसोमेरीसषीरषेतोयहजानेंजो

श्रीयसोदाजीपोढीहें ॥ याप्रकारललिताजीनेंकहीतबकी
रतजीनेंश्रीयसोदाजीकोभेषधर्यो ॥ पाछेंललिताजीआप
नीसिज्याविछाइतापरपधरायसामिग्रीआरोगाइसे
जपरसेंनकराइतबसोवतहीनींदआइगइ ॥ श्रमतहती
तासों ॥ पाछेंललिताजीहोरीकेषेलमेंआइ ॥ सोयहजो
[illegible]श्रीठाकुरजी[illegible]पायोजोश्रीकीरतजीललिताकीकुंज
मेंपोढीहें ॥ तबश्रीठाकुरजीश्रीनंदरायजीसोंकहेजोबा
बाजीतुमकोंश्रमभयोहोइगोतातेंतुमचलोतोएकांतमें
[illegible]ऊ ॥ तहांतुमनींदभैयतासोंबेगे ॥ तबश्रीनंदरायजी
श्रीठाकुरजीसोंकहेजोमोकोंश्रमबहुतभयोहे ॥ तातेंतुम
मेंकोंलेचलो ॥ याप्रकारश्रीनंदरायजीकोंश्रीठाकुरजी
संगलेंललिताजीकीकुंजहतीजहांकेलाकीकदमष
डीमेंतहांलेगए ॥ तहांनानाप्रकारकेसघनलताहें ॥ फ
लफूलनकेकदंबनकेरासमंडलअनेकहें ॥ नानाप्रका
रके ॥ पंछीसब्दकरतहें ॥ ताकेभीतरनिकुंजमंदिरहे ॥ त
हांश्रीठाकुरजीश्रीनंदरायजीकोंलेजाइपितापुत्रनांनां

होरी· प्रकारकी सामिग्री आरोगे ॥ तब तहां श्रीनंदरायजी देखें
१०२ तो सेजऊपर कोऊ सोवत हे ॥ तब श्रीनंदरायजीने श्रीठाकु
रजी सों पूछ्यो जो सेज पर को सोवत हे ॥ तब श्रीठाकुरजी क
हे जो मै याकों बहुत श्रम भयो हुतो सो मै याकों सामिग्री आ
रोगायके सेन कराई हे ॥ तब श्रीनंदरायजी श्रीठाकुरजी
पर बहुत प्रसंन होइ मुषचुंबन करिके कहे जो तू भले ग
रलायो ॥ तब श्रीठाकुरजी श्रीनंदरायजी सों कहे ॥ जो [illegible]
म्हारो मन होइ जो सेन करियो ॥ तुम्हारो मन होय [illegible]
रहियो ॥ इहां कोई जानत नाही तुम निर[illegible]राजो ॥
मैं अब होरी षेल में जात हों ॥ तब श्री[illegible]यजी कि जो या
जो बालक को मन षेल मे बहुत रहत हे ॥ [illegible]
श्रीनंदरायजी श्रीठाकुरजी सों कहे जो मै [illegible] तुम षे
लमें जाऊ ॥ यका हूं को गेर मति बतैयो ॥ या प्रकार श्री
ठाकुरजी तुरत ही षेल में आए ॥ काहे ते होरी के षेल मे
मुख्य श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी हैं ॥ जो दाऊ न मैं ते
काऊ एक हू और गेर पधारें तो षेल में अछी भांति बने

नांही ॥ ताते श्रीठाकुरजी वेगही षेल में पधारे ॥ तब श्रीलालि
ताजीने जांनी जो मेरी कुंज में ॥ श्रीठाकुरजी ॥ और श्रीनंदरा
यजी पधारे हें ॥ सो श्रीठाकुरजी तो इहां आए ॥ और श्रीनं
दरायजी नहीं आये ॥ सो कहा कारन हे ॥ तब श्रीलालिता
जी [illegible]नीनि कुंज मे फेर चली ॥ तब श्रीठाकुरजी सेन
[illegible] कहे जो [illegible]नी कुंज मे फेर क्यों जात हे ॥ तहां जाय
के [illegible] षेल मति बिगारियो कहूं ॥ तब ललिताने कह्यो जो
तुम्हारो षेल [illegible] और सुधारि आऊंगी ॥ तुम्हारी प्रसंनता हो
[illegible]सोई मैं करोंगी ॥ मैं तुम्हारी आग्यां कारनि हों ॥ इहां
श्रीनंदरायजी सामिग्री आरोगि जलपान करि सिज्या
के निकट जाइ देषें तो इहां कोई नाही हे ॥ रंचक मेहूं सेन क
रिले हुं ॥ पाछे श्रीनंदरायजी जहां श्रीकीरतजी [illegible] आप
र सेन कीये हुती ॥ तहां श्रीयसोदाजी को जानिके श्रीनंदरा
यजी हूं एक और सेन किये ॥ सो श्रीनंदरायजी श्रम त[illegible]
ए हुते ॥ ताते सेन करतही निंद्रा आइ गई ॥ इतने मे श्रील
लिताजी तहां आइके देखें तो श्रीनंदरायजी और श्रीकीर

हारी तजीएकसेजपरसेनकरिपोढेहैं॥ तबलालिताहुतीसो
२१० श्रीकीरतजीकेकेसकोजूराषोलिश्रीनंदरायजीकी
चुटियाषोलिदोऊमिलाइकेंअच्छीगांठिपारकीडो
रीसोंबांधिपाछेंकीरतजीकीसाडीलेश्रीनंदराय
जीकेउपरनांसोंगांठिबांधिपाप्रकारदोऊनकोंएक
चादरिउढायकेंआपुहोरीकेषेलमेंआइ॥ तबश्री
गकुरजीनेंसेनहींमेंललितासोंपूछ्योजोमेरोषेलवि
गारतोनांहीआइ॥तबललितानेंश्रीगकुरजीसोंकही॥
जोजबतुमजाइकेंदेखोगे॥तबवहतुमसें[illegible]उगे॥ह
ऊनकीवेनीबांधीहे॥ऐसोकारजकरिआईहैं॥ तबश्री
गकुरजीललितापरबहुतप्रसंनभये॥पाछेंलली
ताजीश्रीचंद्रावलीजीऔरविसाषाजी[illegible]हनी
जीकोघेररहीहती॥तहांआपकेंअबीरगुलाललउडा
यअंध्याराकरिश्रीरोहिनीजीकोंपकरिकेंकीरतजीको
भेषबनांयो॥रहांमधुमंगलसांमग्रीलाइकेंकुंजकें
भीतरआछेंजतनसोंधरिकेंजहांकोउजानेंनांही॥

रहांललिताश्रीवृषभांनजीकेनिकटजाइहाथजोरि
केंकही जोमेंतुम्हारेघरकीहों॥तातेंमेंतुमसोंएकबा
तकहनआईहों जोतुम्हारीबहूकीरतजीतुम्हारेआ
गेंडजनोंकोंपकीयोश्रीनंदरायजीपें॥पारिडनकोंश्री
नंदरायजीकोघरबहुतहीआछोलाग्योहे॥सोकी
रतजीश्रीनंदरायजीकेघरजांइतोहमारीतुम्हारी
लाजजाइ॥ तातेंमेंओरश्रीचंद्रावलीऔरविसाखा
जीमिलिकेंसमुझांइ॥परंतुमांनतनांहीहें॥सोउहां
श्रीचंद्रावलीजीनेंऔरविसाखाजीनेंघेरिकेंरा
खीहें॥सोतुमबेगिहीचलोसमुझाइकेंआपनेंघ
रलेचालिये॥ तबश्रीवृषभांनजीकहेंइखीकेंपरि
व्रजांनेंनजाइ॥ मेरेआगेंतोश्रीनंदरायजीकोंह
सतचुपकेंमांजीही॥मारेडरकेंकांपनलागीजोमें
श्रीनंदरायजीकोमुखकबहूंनदेषोंगी॥याभांतिसों
कोंकूंमेंहीसुनांयो॥अबदेखिललितातूकहतिहे॥जो
श्रीनंदरायजीके घरजातहे॥तबश्रीलालि

होरी· ताजीनें कही जो तुम वेगि चलो यामें कोई जानें नांही सम
१११ झायकें घर ले चलियें ॥ तब श्री वृषभानजी लाल ताके
संगही चले ॥ सो श्री रोहिनीजीनें देख्यो जो यह जो होरी
को दिन हे ॥ सो मेरी हांसी करेंगे ॥ और मधुमंगल हू मेरी
हांसी करिवेकों गूंगेही घर तें ले आयो हे ॥ तब श्री रोहिनी
जी फेरि अपने घरकों चली ॥ तब श्री चंद्रावलीजी और
विसाखाजी अवीर गुलालकी आंधि ध्यारी करि भुजा
पकरिकें श्री रोहनीजीकों गाढी करि राखी ॥ तब श्री वृष
भानजी निकस्यार श्री चंद्रावलीजीसों और श्री विसा
खाजीसों कहें जो हे बेटी हो तुम तो मेरे [illegible] की परवा हेत
कारनी हो ॥ जेसें मेरी राधा बेटी प्रिय हे ॥ तेसें तुमहू हो सो
मेरे घरकी हो ताहीकों तुमा [illegible]रकत हो ॥ यह [illegible] नब
हिये ॥ तब श्री चंद्रावलीनजी और श्री विसाखाजीनें
कह्यो जो ॥ श्री वृषभानजी तुम तो चतुर प्रभु हो हमनें
याके लीयें अवीर गुलाल उडायो जो कोई और गो
पी को यह तिहारे घरकी बात जानी न परे ॥ और हम तो

अनेक भांति समझाइ हाथ पकरिकें इनकों राखी हे ॥ नां
तर तो कभी की श्री नंदरायजीके घर चली जाती ॥ तातें तु
म अब इनकों हाथ पकरिकें ले चलो ॥ समझायतें कोटि
पाइतें न समुझेंगी में और ललिता विसाखा इनकों बहुतें
री समुझाई हे ॥ तातें अब तुम वेगिही घरकों चलो ॥ इहां
[illegible] जान नांही ॥ घरमें आछी भांति समुझाइयो ॥ तब
श्री वृषभानजीनें श्री रोहिनीजीकी भुजा गाढी करि पक
रि लई ॥ तब श्री रोहिनीजी लाज पायकें बेग गई ॥ तब श्री
वृषभानजी दोऊ हस्तसों भुजा पकरिकें बहुतेरो बल कियो
सो श्री वृषभानजीसों न छूटी ॥ काहेतें श्री वृषभानजी देह
करिकें अत्यंत सूक्ष्म हें ॥ श्री रोहनीजी पारीसी क भारी
हें ॥ तब श्री वृषभानजी कहे जो अब में कहा करों ॥ हे ललि
ताजी विसाखा हें चंद्रावलीजी यह मेरी लाज बोवेंगी ॥ ता
तें भई सो तो भई ॥ परंतु अब अपने घर चलो तो बडी बा
त हे ॥ तब ललिता विसाखा चंद्रावलीजीनें श्री वृषभानजी
सों कह्यो जो एक जतन हें जो तुम करो ॥ तब श्री वृषभान

होरी· १।जीकहेजोललिताबेगिबताइज्योंघरलेजाऊं॥पाछेंमें
११२ घरमेंसमुझाइलेउंगो॥तबललितानेंकहीजोकहोतो
तुम्हारेकांधेपरबेगाइदेंउ॥पाछेंतुंमलेचलो॥तबश्रीह
रखमांननीजीकहेजोमोमेंइतनोबलनाहीहे॥जोकांधे
परइनकोंबेगारिकेंघरताईलेजाऊं॥तबललितानेंही
तुमकोंबहुतश्रमनहोइगो॥मेंहूंविसाखाहूंचंद्रावली
हूंतुम्हारेसंगपकरेंचलेंगी॥एकतुमबेगारिबेमांत्रले
हु॥तबहरखमांनजीबेंगे॥तबश्रीरोहिनीजीकोंललि
ताविसाखाचंद्रावलीजीउगाइश्रीहरखमांनजीकेकां
धेपरबेगारिश्रीरोहिनीजीकोकटिकोंहरखमांनजी
कीफेंटसोंबांधिएकओरश्रीचंद्रावलीजीविसाखा
एकओरललिताश्रीहरखमांनजीकोभुजापकरिकें
उगाइलियें॥पाछेंतेमधुमंगलदोरिकेंश्रीहरखमांन
जीकोकटिपकरिकेंउगाइदीए॥पाछेंमधुमंगल
चालसोंचले॥तबललिताविसाखाचंद्रावलीतेंश्रीह
रखमांनजीकहेजोभारबहुतहे॥तबललितानेंकही

जोअबयासमेंबनोलामाति॥कहांहमनांहीजांनतहें॥तातें
काहूभांतिसोंदुःखसुखसोंघरलेचलो॥तबश्रीहरख
मांनजीचुपहोइरहे॥इहांश्रीठाकुरजीनेंश्रीबलदेव
जीसोंकह्योजोदाऊजीतुमश्रीदामाकीगोदमेंसूतेही
रहोगे॥इतनेंतोश्रीहरखमांनजीव्रजकेराजातुम्हारीमाता
श्रीरोहिनीजीकोंकांधेपरधरिअपनेंघरकोंलियेंजा
तहें॥लोकबकेराजाहेंमेरीतोकछूबसचलतनांहीइन
सों॥तातेंदाऊजीतुमसोंजतनबनेंतोकरो॥श्रीरोहि
नीजीबहुतहीलजामांनहेंदुःखपावतिहें॥यहसुनि
केंश्रीबलदेवजीकोंएकतोपहिलेंक्रोधउपनेंदओरश्री
रेवतीजीकोपरसंगकोभयोहुतो॥ओरदूसरोश्रीरो
हनीजीकोसुन्यो॥सोतुरतहीएकमारोसोलगलेकेंवे
गिहींश्रीहरखमांनजीकेसनमुखआयकेंकहेजोहरख
मांनतुराजाहेतोअपनेंघरकोहे॥सोइतनोंतोकोंक
हाअभिमांनहें॥जोमेरीमाताकोंतूंअपनेंघरलेजाइ
गो॥तातेंमेंतोकोंआजआछीभांतिसिक्षादेंहुंगोजो

होरी· ।तू राजा होयके फरिका हूको दुःख न देइ ॥ तें अपने मन
११३ में यह जांन्यो जो गरी वज्रही रहे ॥ मेह मारो कहा करेगो
सो मोंको तू नाही जांनत हें ॥ ज्वा गुक्कारिङ पाय करि
परंतु तोको छोडोंनाहीं ॥ या प्रकार श्री बलदेवजी क्रो
धके वचन कहे ॥ ताहीसमय श्री बलदेवजी के अरु
न नेत्र होइ भ्रकुटी अत्यंत टेढी होइ अधरोष्ट फरकन
लागे ॥ सो यह छबि श्री बलदेवजी की देषिके श्री व्रष
भांनजी तो डरपन लागे जो अब मोंकों श्री बलदेवजी
निश्चय मारेंगे ॥ सो भयके मारे श्री व्रषभांनजी
की बांनी बंद होइ गई ॥ कछू वचन [illegible]
और ललिता विसाखा श्री बलदेवजी को इतते
आवत देषि ताही समें श्री चंद्रावलीजी [illegible] श्री
व्रषभांनजी को छोडिके भाजी गई ॥ और मधुमं
गल हु तो सो ऊ पीछे तें छोडिके भाजि गयो ॥ सब
व्रजवासी गोप गोपी डरपन लागे ॥ श्री बलदेवजी
के डरके मारे कोऊ निकट आवे नांही ॥ यह संसार

में भयानक भयो रसके समय में ॥ और श्री यसोदा
जीको वात्सल्य रस ऊपर कहि आए हें ॥ और सब आ
गें कहेंगे ॥ तब श्री बलदेवजी के मारे डरके श्री व्रषभांन
जी बगि गए ॥ तब श्री रोहनीजी श्री व्रषभांनजी के कांधे
ते उतारिके कही जो मोको व्रषभांनजी ने यह तडु:ख दी
[illegible] ॥ इतने ही में श्री ठाकुरजी श्री स्वामिनीजी श्री च
[illegible] निकट आए ॥ तब श्री स्वामिनीजी ने श्री ठा
कुरजी सों कही जो तुम अपने दाऊको बरजो मेरे पिता के
ऊपर क्रोध क्यों करत हें ॥ खोये तो तुम्हारो सब घर
फालो गहे ॥ श्री रेवतीजीने तो विचारो बुरो बावरो उप
नंद होता को पक्ष्यो ॥ और श्री यसोदाजी मेरे पिता सों गा
रि ओर केंकही जो में तुम्हारे [illegible]गी ॥ और श्री रोहनी
जी की यह लीला प्रगट देषियत हो जो मेरे पिताके सं
ग चली है ॥ सो होरीके दिन में क्रोध चहिये नांही ॥ तब श्री
ठाकुरजी श्री बलदेवजी सों कहे जो तुम श्री ललिताजी
की कुंजमें जाऊ तो तुम्हारो क्रोध [illegible] मां होइ जाइ ॥ त

होरी । तबश्रीहरखभांनजीउमिकेंअपनेंगोपनकेंनिकटआ
२२५ ये॥ ओरश्रीठाकुरजीहासिकेंश्रीबलदेवजीकोंमिले
ताहीसमयश्रीबलदेवजीकोंक्रोधसबमिटगयो
पाछेंसबसाज॰समाजश्रीठाकुरजीश्रीस्वांमिनी॰
जीश्रीबलदेवजीश्रीहरखभांनजीगोपसगरेश्रीलालि
ताजीकीकुंजमेंचले॥ तबश्रीस्वांमिनीजीनेंश्रीलालि
ताजीसोंकहीजोआजहमतुम्हारेघरमेंचलतेंहेंसो
हमकोंकहाभेटधरोगी॥ तबश्रीलालिताजीनेंकही
जोआजश्रीहरखभांनजीकीपरमप्रेपवस्तुसोंधी
गरीहोसोहरखभांनजीकोंभेटधरोंगी॥ तामेंतुम्हारो
सनमानआइगयो॥ ओरमेंतुम्हारीसखीहोंसोतुम्हा
रोघरतुम्हारोहीतोहे॥ तुम्हारेपीछेंमोकोंसगरोईसु
षहे॥ तबश्रीठाकुरजीहांसिकेंकहेजोललितामेंतुम्हा
रीकुंजमेंचलतहोंसोमोकोंकहाभेंटधरोगी॥ तबल
लिताजीनेंमुसिकाइकेंकहीजोअनेकजतनकरिकें
नांनाप्रकारकीसांमिग्रीबहुतकालतेसेंनकरिकेंसि

धकरीहेजोतुम्हारेआगेंभेटधरोंगीसोतुमकृपाकरि
केंअंगीकारकरोगे॥ मेरोमनोरथसदातेंसिधकरत
आएहो॥ ओरतुमहीसिधकरोगे॥ सोआजुमेरेघ
रपहुनांईहें॥ याप्रकारपरमसनेहकीवार्तापरस्परक
रतललिताजीकीकुंजमेंसबसमाजसहितआए॥ तब
श्रीस्वामिनीजीश्रीठाकुरजीश्रीबलदेवजीश्रीहरष
भांनजीमधुमंगलसखाइत्यादि॥ ओरललितावि
साषाश्रीचंद्रावलीजीइत्यादिकसबसखीदेषेंतोसु
दरसीदरिआढसेजऊपरकोऊपोढेहें॥ तबश्रीस्वामि
नीजीनेंललितासोंकहीजोतेंअपनीसेजपरकोंन
सेंगोपकोंसुवाइराख्योहे॥ तबललितानेंकहीजोमेंतो
तुम्हारेसंगखेलमेंहुती॥ पारिअबदेखियेयहकोंन
केघरकीवातहे॥ तबजाइकेंतहांश्रीनंदरायजीहुते
तहांमुखकीओरकीचादरिउघारी॥ तबसबननेंश्री
नंदरायजीकोंमुखदेख्यो॥ पाछेंललितानेंहरखभां
नजीसोंकहीजोतुमश्रीनंदरायजीकोहस्तपकरिकें

हारी· उगायलेउ॥ तबश्रीहरखभांनजी कहे जो मोमें इतनों बल
११५ नांहीं जो मेंश्रीनंदरायजीकों उगायलाऊं॥ ताहूमें आ
जमें श्रम तब हुतहो॥ तबश्रीबलदेवजीनें श्रीनंदरा
यजीकी भुजापकरिकें ऐसो ऐंच्यो॥ सो श्रीकीरत
जीसहित उभिआए॥ तबश्रीनंदरायजी आपकूं नी
दमें कहे जो मेरी भुजाकों नलें चतहें॥ और कीरत
जी कहे जो मेरो जूराकों न ऐंचतहे॥ सो यह सो भादे
खिकें श्रीठाकुरजी श्रीबलदेवजी औरसखासबहू
तप्रसंनहोइकें हसें॥ और श्रीहरखभांनजी कीरत
जी बहुतही लजत भए॥ तबश्रीस्वांमिनीजी [illegible]स
जित होइकें कही जो॥ इहां श्रीनंदरायजी और की
रतजी कैसें आए॥ फेरि श्रीस्वांमिनीजी ने ललिता
सोंकही जो ललिता तें मेरी मैया की हांसी कराई॥
तब ललिता ने श्रीस्वांमिनीजी सों हाथ जोरिकें वी
नती करी जो मासों एसी मति कहो में तो आपुकी
सखी हों॥ और में तुम्हारे पास होरी के खेल में हती॥

सो मैया बात को भेद जांनत नांहीहो॥ तब ललिता सों श्री
स्वांमिनीजीनें कही जो अब तू एसी हांसी श्रीबलदेवजी
की करावे॥ जो सब ब्रजवासी हसें तो जो तू मांगे सोई तोकों
दें हूंगी॥ या प्रकार श्रीस्वांमिनीजीनें कही॥ तब ललिता
हती सो श्रीस्वांमिनीजी सों कही जो एसी हांसी श्रीठाकु
रजी की और श्रीबलदेवजी की करां जो कबहूं न भई हो
इ॥ परंतु एक वस्तु आजु में मांगति हों सो तुम अपनी इ
सो जो तो मोकों देउ॥ तब श्रीस्वांमिनीजी नें हांसिकें क
ही जो ललिता तू ऐसी दीनता काहेकों करत हें॥ एसी
वस्तु कोंनसी जगत में हे सो में तुमसों छिपाइ राखी हे॥
तू मेरी प्रांनप्रिय अंतरंगनी सखी हे॥ ताते जो तेरो मनो
र्थ होइ सो प्रीति सहित मांगिले॥ तब वचन दृढ करिकें
ललिता नें कही जो में नानाप्रकार की सामिग्री त्यार क
रिकें राखी सो तुम रूचिकें श्रीठाकुरजी कों देहु तो में प
धरायकें लेआऊं॥ तब श्रीस्वांमिनीजी तो ख्याल करि
कें रहत ही भोरी हें॥ सो कहे हां ललिता तू इतनों ई मां

होरी· गतहे॥ औरहूनूमांगिले॥ तूंअपनीकुंजमेंसामग्रील्या
११६ रुकारि॥ पाछेंश्रीठाकुरजीकोंपधिरायलैजैयो॥ तबललि
तानेंजितनीसखीहतीतिनसबनसोंकह्योजोआजुमे
राकुंमपस्योहे॥ तुम्हारीसबसेवाकोफलहे॥ तातेंजित
नीगोपीगोपसबब्रजकेश्रीकीरतजीश्रीवृषभानजीश्री
नंदरायजी॥ श्रीजसोदाजी॥ श्रीरोहनीजी॥ श्रीरेवतीजी
श्रीबलदेवजीआदिबालकतरुनवृधइनसबनकोंऐसे
ठौरदेहेजोएसबआपनोंआपनोंघरनभूलिजांइ॥ आप
कोंरांनसषीऐसीचतुररहें॥ जोएकएकसषीकीदासी
अनगनहें॥ तेसीकोनिकुंजमंदिर[illegible]कीए
तहांनानाप्रकारकेरागभोगऔरअपनें[illegible]आगे
सोंहाथजोरेंकुंजकुंजप्रतिठाढीहें॥ सोएक[illegible]निकुंजमें
कीरतजीकोंश्रीवृषभानजीकोंपधराए॥ एकनिकुंज
मेंश्रीबलदेवजीकों॥ श्रीरेवतीजीकोंपधराए॥ एक
निकुंजमेंश्रीनंदरायजीकों॥ श्रीजसोदाजीकोंश्रीरो
हनीजीकोंपधराए॥ औरन्यारेन्यारेनिकुंजमेंसखा

गोपीजनकों॥ तिनकोंतेसोमनोर्थहोवालकवृधतरुनतिन
कोंताहीभांतिकीसिधहाथजोरेंन्यारेठाढीहें॥ सोऐसोसु
खसगरेब्रजवासीनपायोजोआपनेंआपनेंघरनकीसुध
भूलिगए॥ ललिताजीकोचैनवदाखकेचक्रतहांहोइगए
सोललिताजी[illegible]यांनकोंटगुनोधिकबैभवकोंरांनकोंदिखा
ईनीहें॥ निजनिकुंजमेंहे॥ औरस्वामिनीतेंकोटानगुन
[illegible]श्रीचंद्रावलीजीकीनिकुंजमेंहे॥ औरश्रीचंद्रावली
जीकीचतुर[illegible]कुमारिकाश्रीयमुनाजीकोहे॥ तिनहूंतें
अधिकश्रीस्वामिनीजीकोहे॥ ऐसीभांतिबनीपदार्थहेत
हांसबनकेमध्यएकांतविषेंश्रीठाकुरजीश्रीस्वामिनीजी
श्रीललिताजीन्यारेनिकुंजमंदिरमेंविराजे॥ सोयहसोभा
श्रीललिताजीकोसोभाग्यदाखकेंश्रीचंद्रावलीजीऔर
विसाषाजीकेहृदयधरनभयो॥ तबमिलकेंदोऊआपुसमेंमं
तोकरनलांगी॥ सोनिकुंजतेंडगिकेंबाहरबनमेंआई॥ सो
यहरससास्त्रमेंकहेहें॥ विरहानीविरहानीदोऊबातांफ
हें॥ रसमेंअपनेंप्रीतमकी॥ तबविसाखासोंश्रीचंद्रावली

हारी. ११७

जीनें कही जो हे विसाखा आज ललिता के भाग्य को पा
रावार नांहीं है॥ काहेतें जो श्रीठाकुरजी इनके वस में हैं॥
और श्रीस्वामिनीजीनें अपने मुखतें कह्यो जो में तुम
कों दए॥ तातें ललिता की बराबर भाग्य आजु काहू को नां
हीं॥ तातें हे विसाखा अपनों ऐसो कोंन दिन आवेगो जो
श्रीठाकुरजी कों एकांत कुंज मों मिलेंगी॥ या प्रकार श्रीचंद्रा
वलीजी विसाखाजी सों विरह के वचन कहन लागी॥ सो क
हत कहत अपन कों श्रीठाकुरजी मिलिकें सुख दीए हें॥ सो
सुख ये हें॥ सुख को स्मरन होइ आयो॥ सो प्रेम [illegible] सगद्
गद होइ आयो सो सरीर सों पुलक [illegible] प्रे
म के वस होइ विसाखाजी के कंठ में भुजा [illegible] कहन ला
गी॥ हे विसाखा यह होरी को दिन रंगमगो है॥ [illegible]रना
री के हृदय तें अनुराग बाहर निकस्यो है॥ सो भागपनी ना
इका है॥ सो श्रीनंदनंदन अपने प्रानपति सों रसरूप होरी
षलति हें॥ और देषि विसाखा ये वन की जो सुंदर वालि हें॥
सा वडे वडे [illegible]न सों लपटि रही हें॥ मानों मन में कोरी हस

तहे॥ और देखि मो सों कहति हे जो देखो हम अपने पतिकों
धरन सों लेके सिखा पर्यंत लपटि रही हे॥ और तुम अपने
पतिकों छोडि के न्यारी फिरत हो॥ ताहू में ऐसे रसरूप होरी
के दिनन में प्यारे सों बिछुरनों उचित नांहीं॥ तातें हे विसाखा
में बडी अभागिनी हों सकल हूं श्रीठाकुरजी के चरनारविंद में
[illegible]नांही लगायो॥ अपनी रूप जोवन में चतुराई के देह सु
ख में [illegible]नामिथ्या छिया मिथ्या ध्यांनामिथ्या भाषन
[illegible]न कों अपने प्रेम सों न्यारी रही॥ तातें हे नाथ हे नंदनंदन हे॥
चतुर[illegible] मनजी हे करुनासिंधु॥ हमारे प्रान के रक्षक॥ ह
मारे श्रीनमप्रांन वल्लभ॥ हा गिरराज के धरनहारे॥ हा मेरे हृ
दय के भूषन अब मों कों कब मिलोगे मो अभागिनी कों क
ब वेंन नाद सुनाय हृदय सीतल करोगे॥ मों कों अधरामृत
दांन कब करोगे॥ में तुम्हारी सरन हों॥ अनाथ हों॥ अपने वदी
न हों॥ महा दुखी हों॥ में सब अंग करहीन हों अपनी दासजा
नि कें मो पर अनुग्रह करो॥ या प्रकार के कोटिन वचन दैन्य
के कहे॥ श्रीचंद्रावलीजी कों विरह मगट भयो सो अंग अं

होरी· गसवासिथलहोइयो ॥ हाथनकी चूरी सब आभूखन ढीले
११८ होइआये ॥ तब विरहतें स्वास [illegible] होत भयो ॥ यह दिसा श्री चं
द्रावलीजी की देखिकें श्री विसाखाजी कों आपनो विरह भू
लिगयो ॥ कही में कहा करों इनकों कोन प्रकार समुझाऊं या
प्रकार विसाखाजी विचार करनलागी ॥ और एकबार वि
साखाजी तो विरह के समुद्र में डूबिकें मगन हे गई ही ॥ पा
छें श्री ठाकुरजी के ख्याल ताके गुन हृदय में स्फुरते होइ आ
ए ॥ तब विरह के समुद्र तें निकासिकें [illegible] विसाखाजी सों क
ही जो हे विसाखाजी मोकों श्री ठाकुरजी को बडो विस्वास
हे ॥ जब जब मोकों विरह में विकलता भई हे ॥ तब तब ठा
कुरजीने रक्षा करी हे ॥ या में संदेह नाही हे ॥ कब हूं मेरो मन
में [illegible]ल्याए नाही हे ॥ ता तें मोकों दासी जानि रक्षा करे
दरसन देहिंगे ॥ या प्रकार धीरज के वचन कहत कहत फीर
विरह होइ आयो ॥ सो कब हूं तो विरह होइ कब हूं धीरज हो
उ ॥ सो यह दिसा श्री चंद्रावलीजी की श्री ठाकुरजीने जानी
॥ तब एक दूसरो सरूप सषी जन को धारिकें श्री चंद्रावलीजी

के निकट पधारिकें कहे जो तुम इतनों विरह दुरत: क्यों करत
हो में [illegible] नहीं श्री ठाकुरजी के निकट तें आइ हों ॥ सो आप श्री
ठाकुरजी मेरे आगें ऐसी कहे जो श्री ललिताजी को मनोर
थ पूरन करिकें श्री चंद्रावलीजी को मनोरथ पूर्ण करेंगे ॥ ता
तें तुम विरह क्यों करत हो ॥ में सो हक रि कहत हों जो तुमकों
श्री ठाकुरजी मिलेंगे ॥ इतनो सुनिकें श्री चंद्रावलीजी आंष
खोलिकें सम सुंदर सखी देखिकें आपनी परमप्रीतज जानि
कें मिली ॥ सो श्री चंद्रावलीजी को अंग अंग सीतल होइ ग
यो ॥ पाछें श्री चंद्रावलीजीने कही जो हे प्रान प्रिय सो तू मो
कों अम्रत रूप वचन सुनाइ कें जिवायो ॥ और मेरो हृदो जे
सें श्री ठाकुरजी के मिलें तें सीतल होत हु तो तेसें तुम्हारे मि
लें तें मेरे हृदय में सीतल[illegible]ता होत भई ॥ ता तें हे सखी ज
व तांई मोकों श्री ठाकुरजी मिलें तब तांई तू जाइ मत ॥ तब स
खीने कही सुनों श्री चंद्रावलीजी तुम आपनो निकुंज में पधारि
अर्थ नाना प्रकार की सामग्री त्यार करो ॥ और में वेग ही श्री
ठाकुरजी को पधराइ लाऊंगी ॥ यह सुनिकें श्री चंद्रावलीजी

होरी अपनेगरेंमेंतेगजमोतीनकी मालाउतारिप्रियसखीको
११९ पहिरायकेंकहीजोहेसखी मेरोविरहरूपसमुद्रमेंमेरे
प्रानकीरक्षातेंकरीहे॥ अबतुमजोमांगोगीसोईमेंदेहूं
गी॥ तुमश्रीठाकुरजीकोंवेगिहीपधरायलावो॥ तवश्री
ठाकुरजीउहांतेंअंतरध्यानभए॥ तवश्रीचंद्रावलीजीवि
साखाजीकोहस्तपकरिकेंकंठमेंभुजामेलिअपनीकुंज
मेंपधरायलेगई॥ ताकोंनेंयेहिनावलीकुंजहे॥ तहांप
धरायकेंअपनीकोटानकोटसखीहें॥ तिनसोंआग्या
करीजोसुंदरसुंदरहोरीकीसामग्रीसिधकरो॥ अनेक
भोगरागकुंजकीरचनाजोआजुमेरेतुम्हारेभाग्यउदय
हेजोश्रीठाकुरजीमेरेघरपधारेंगे॥ तवसखीननेंनिकु
जमंदिरपरमसुंदरहेतामेंअरगजासुगंधसींचीहे॥ धु
जापताकातोरनमालाअनेकरचनाकरीहे॥ नानाप्रका
रकीकुसुमसिज्यासिधकरीहे॥ तवश्रीचंद्रावलीजी
सोंकहीअवकुंजमेंपधारो॥ तवश्रीचंद्रावलीजीध्यानक
रिपरमकोमलवस्त्रपहिरकेंकोलिसिज्यापासआसनवि

छायकेंआइवेंगी॥ तवअपनीनिकुंजकीरचनादेखिकेंसखी
नकेऊपरबहोप्रसंनभई॥ ताहीसमयअंम्रतवचनबोली
जोहेललताद्रुमवेली तुमआजपहुतहीपरमआनंदमेंफू
लफूलसंयुक्तप्रसंनहो॥ औरपसुपंछीअपनेअपनेगि
कानेंजहांजाकोसुखहतोतहांविराजेलीलाकोस्मरनक
रतहें सघनकुंजश्रीठाकुरजीकीआरतिलागिरहीहे॥ तिन
सोंदेखिकेंश्रीचंद्रावलीजीनेंकहीजोतुम्हारीआरतितेंश्री
ठाकुरजीपधारेंगे॥ मेंजानतिहोंतुममोंकोपरमसुखदा
ईहो॥ मेरेदुखःतेंदुखीहो॥ मेरेसुखतेंसुखीहो॥ फेरवंदो
वतनवाइदियो॥ ताकेपासेज्यामालावीजनलक्षीकारी
अरगजाअबीरगुलालचोवाश्रंगारकरनकेंअनेकआभू
षनवस्त्रकीए॥ इत्यादिकदेखिकेंकह्योजोआजुप्रभुप
धारेंगे॥ तवयहसामग्रीसुफलहोइगी॥ सवमनोरथसु
फलहोइगे॥ श्रीठाकुरजीपूरनकरेंगे॥ पाछेंसिज्याकेंआ
सपासअनेकचित्रामानेमांगबंधादिकहास्यप्रसंगकेहें॥
सोदेखिकेंलजाइमानभई॥ औरहृदयतेंअंगअंगमेंको

हारी·
१२०

मको उदीपन भयो ॥ तब श्री चंद्रावली जी आभूषन कों पे
टी पास धरिकें दर्पन अपने हस्तक मल मलेते एक एक
आभूखन भाव सहित धरा पर दर्पन देखि भाव सहित वि
चारत हें ॥ जो श्री ठाकुरजी पधारिकें मेरें आभूखन कों पा
प्रकार अंगीकार करेंगे जो या प्रकार कह्यो नांहीं जाइ श्री
महाप्रभूंन की कृपा तें हृदय में स्फुरे तें होइगो ॥ या प्रकार श्री
चंद्रावली जी अपनी कुंज में शृंगार करत हें ॥ और उहां श्री
ललिता जी श्री ठाकुरजी कों श्री स्वांमिनी जी कों अनेक भां
ति की मेवा आदि सामिग्री आरोगाइ परम दैन्यसों श्री
स्वांमिनी जी की चरन सेवा करन लागी ॥ तब श्री स्वामि
नी जी बोली जो ललिता में तो पर प्रसन्न हों ॥ तातें जो मन
पें होइ सो ही मांगि ले तब ललिता ने कही जो में तो आप
की सामिग्री अनेक जतन सों सिद्ध कर राखी हे ॥ सो तु
म श्री ठाकुरजी कूं मेरें संग देउ तो में आरोगाइ कें अब
हीं ले आऊं ॥ यह सुनि कें श्री स्वामिनी जी ने श्री ठाकुरजी
सों कही जो यह ललिता अपनी परमप्रिय सखी हे ॥ ता

तें याके संग पधारिकें सामिग्री अंगीकार करिकें वेगही
मेरे निकट आऊ यो यह सुनि कें श्री ठाकुरजी चुप होइ रहे त
ब ललिता जी ने विचारी जो क्यों हूं करि श्री स्वांमिनी जी ने आ
ज्ञा दई हे और पधारें नांही ॥ तब ललिता हुती सो नु जाप क
रिकें श्री ठाकुरजी कों उगफलरे ॥ तब श्री ठाकुरजी गटेल
रि ॥ तब श्री स्वामिनी जी विरह वस होइ कें चोगी ही उठि कें श्री ठा
कुरजी को मुं जाप करि अपने निकट वेगाइ लिये ॥ और
ललिता सों कही ॥ अरी ललिता तें मेरो प्रान नही मांग्यो अब
ऐसो महा करो ॥ तातें आर जो फेरि कें मांगे सो देहुं ॥ मेरे प्रान
तू मांगे ॥ सो कहे तो याही छिन देहुं ॥ परंतु मेरे प्रान नाथ जी
न को मुखदारविंद कें में जीवत हों सो कैसें दे रे जाउं ॥ यह सुनि
कें ललिता चाहि कें तहां इगढी होइ रही कछु बोली नांही ॥ तब
श्री स्वामिनी जी ने कही अरी ललिता और कछू न लेऊंगी
में जानत हों ॥ अब में कहा हूं को विस्वास करि वरदान न देहुंगी
या प्रकार वचन कहत कहत विरह समुद्र में मन जाइ पर्यो
तब कही अरी ललिता तू मेरे प्रान नाथ कों कहां ले गई ॥

हारी आजतेंमोसोंऐसोनरह्योकह्यो ॥ याप्रकारकेबाहरके
१२५ वचनकहे ॥ औरहृदयकेभीतरअंगअंगमेंविरहछाइ
न गयो ॥ औरस्वामिनीजूहुतेसोआपुहीतेंसिथलहोइभू
मिपरगिरपरे ॥ चूरीआदिसोश्रीठाकुरजीसबअपनेरूप
रनोंमेंबांधिलीए ॥ मोतिनकीमालातथानकबेसरवेंदी
मांगगुहीहुतीसोसबविरहआगिनतेंफारपरिगये ॥ शृं
गारसबउलटेहोइगए ॥ पाछेंश्रीस्वामिनीजीश्रीठाकु
रजीकेकंठमेंभुजामेलिकेंकहीजोहेसखीतूमोकोंश्रीठा
कुरजीकोंमिलाय ॥ ललिताश्रीठाकुरजीकों[illegible]हे ॥ ते
हांतूमोहूकोंलेचालिनेत्रनतेंजलधारा[illegible]कुंकु
मकुंकुमबहिचले ॥ तिलकवेंदीसिंदूरपसीनातेंबहि[illegible]
पहप्रतछावविरहसबतेंपायो ॥ ऐसोविरह[illegible]कें श्रीठा
६ कुरजीमनमेंकहेजोमेरेमिलेंबिनाहीइतनोविरहभयोसो
मेरेविरहमेंइनकीकोनदसाहोतहोइगी ॥ याप्रकारको
९ विरहललिताजीदेखिकेंचकितहोइमनमेंकहीजोइनसों
श्रीठाकुरजीमोकोंकोनप्रकारमिलेंगे ॥ तबश्रीठाकुरजी

नेंसेनहीमेंललिता[illegible]कोंधीरजदियो ॥ पाछेंश्रीठाकुरजी
श्रीस्वामिनीजीकेकंठमेंभुजामेलिठाडेकेंठाडेकरी ॥ तबश्री
ठाकुरजीललिताकोंआग्यादीएजोएकओरमेंहूंएकओरतु
मपकरो ॥ तबललिताएकओरजाइपकरी ॥ तबतीनोंस्वरूप
ललिताकीकुंजमेंमंदमंदचले ॥ सोजहांललिताकोनिकुंजमें
दिव्य[illegible]मसोआयमानहतो ॥ तहांसंकेतस्थलतथाकहूंको
कला[illegible]पधारे ॥ तहांकुसुमनकीकोमलसिज्याबि
छीहुती ॥ तहांश्रीठाकुरजीश्रीस्वामिनीजीकूंसेनकरायश्री
स्वामिनीजीसोंकहेजोस्वच्छतुमऊपरनासोमुखटापिसेन
करोतोमेंअबहीश्रीठाकुरजीकोंपधरायलाऊं ॥ तबश्रीस्वा
मिनीजीनेश्रीठाकुरजीकीभुजापकरिकेंकहीजोहेसखीतो
कोंतोमेंकबहूंनछोडोंगी ॥ तेरेमिलेंतेंमेरेप्रानरहतहेललि
तानेंतोमेरेप्रानलीनोहुतो ॥ तबश्रीठाकुरजीनेंकहेजोतुममो
कोंछोडोमति ॥ परंतुमुखतोढांपो ॥ तबश्रीस्वामिनीजीएक
हाथसोंऽतोश्रीठाकुरजीकोंपकरेरहींऔरएकहाथसोंमुख
ढांप्यो ॥ तबश्रीठाकुरजीललितासोंसेनहीमेंकहेजोतूआप

होरी नीकुंजमेंचालिकें त्यारिकारि मेंअवहीयाहीरहि नआवताहो
११२ तवललिताउठिकेंअपनीनिकुंजकोंचली ॥ परंतु हृदयमेंधी
रजरंचहूनरह्योजोकोंनप्रकारआवेंगे ॥ तवश्रीठाकुरजीश्री
स्वामिनीजीकेकानमेंकहेजोश्रीठाकुरजी ललिताकीकुं
जतेंपधारेहें ॥ सोइतनोंश्रवनसुनतहीविरहसबदूरिभ
यो ॥ तवमुखखोलिउठिकें देखेतोश्रीठाकुरजीसेज्याऊपर
बिराजेहें ॥ सोदेखिकेंपरमप्रेमसोंमिली ॥ जैसेंप्रानगए ॥ पा
येंइंद्रीचेतन्यहोइ ॥ तेसेंपरमआनंदश्रीस्वामिनीजीपाय
श्रीठाकुरजीकेमुखकमलपरहाथफेरि मुखचुंबनकरिकें
कहीजोआवपधारमातिकहूंजैयो ॥ पाछेंनानांप्रकारकीसां
मिग्रीपरस्परआरोगिआचमनकरि ॥ बीराआरोगिप
रस्परआधरामृतउगारलियो ॥ तवताहीसमेंश्रीस्वा
मिनीजीकेश्रीअंगश्रीठाकुरजीकेअंगसंजोगपुष्टिभ
ए ॥ तवश्रीठाकुरजीआभूषनराखेहुतेसोसवपहिराए ॥ बा
जूबंदपहुंची ॥ फंकनचूरीबेसरिपछेलीहथफूलमुंदरीन
षलीआरसीआदिसवअंगकेनानाप्रकारके ॥ फूलनसों

बेनीगुही ॥ अंजनासिंदूरातिलक चिबुकबिंद ॥ महावरकुंचकुं
मकुमअंगरागसवश्रृंगारासिधकरिअनेककेलीलाकरिसें
नकिये ॥ इहांश्रीठाकुरजीइसरीससूप्रकारिकेंललिताको
मारगहीमेंआइमिले ॥ तवललिताइरहीसोदेखिद्वारि
मिलिप्रसंनहोइकेंकहीजोतुमकोंनप्रकारआए ॥ मेंतो
[illegible]सछाडिकेंआईहुती ॥ तवश्रीठाकुरजीकहेजोसमुझा
इकेंआयाहों ॥ ऐसेंकहिललिताकोमिलिपरस्परकेंठमेल
जोमीलिललिताकुंजमेंचली ॥ इहांश्रीचंद्रावलीजीआप
नेंभावनाहितश्रृंगारकरतहें ॥ औरश्रीठाकुरजीकोमार
गदेखतहें ॥ विसाखाजीपासबेठीहें ॥ पाछेंविसाखाजीने
मनमेंयहविचारीजोमेंइहांक्योंबेठीहों ॥ इनकेपासश्री
ठाकुरजीपधारेंगेतोमोकोंकहा ॥ तवश्रीचंद्रावलीजी
सोंविसाखाजीनेंकहीजोललिताजीकीकुंजमेंश्रीठाकु
रजीहें ॥ सोमेंजायकेंपधिरायकेंलाऊं ॥ तवश्रीचंद्रावली
जीनेंकहीजोप्यारीतूवेगिपधरायलाउ ॥ तवविसाखा
निकुंजमेंतेंनिकासिबाहरवनमेंआइकेंदेखेतोश्रीठाकु

रजीललिता परस्पर गलबांहीं दिये आवत हैं॥ सो विसाखा
दे रखिके सें नहीं मे कह्यो॥ तब श्री ठाकुरजी कैं हे जो तुम अप
नी निकुंज में बालिके वेग ही सब त्यारी करो मो को आ यो
जांनियो॥ तब विसाखाजी अपने मन में परम आनंद पा
इ द्वारि के अपनी निकुंज में जाइ नाना विधि के कुसमन
की सिज्या अनेक राग भोग सिधि कीये॥ इहां श्री ठाकुरजी
ललिता के संग ललिता की निकुंज मे पधारि नाना प्रका
र की सामिग्री आरोगि के जो जो मनोर्थ ललिता को हुतो
सो सब पूर्ण कीए॥ इहां दूसरो स्वरूप धरि श्री चंद्रावलीजी
की कुंज मे पहिले ही पधारि सकल मनोर्थ उनके पूर्ण
कीए हैं॥ पाछें ललिता के ह्यां पाछें विसाखा के कुंज में प
धारि उनहू के मनोर्थ पूर्ण कीए कुंमारिका को आगम यमुना
जी तट श्री स्वामिनीजी के प्रसंग में जांनियो॥ उनकी सु कुंज में
जाइ उनहू के मनोर्थ सिध कीए॥ पाछें जितनी स्वामिनी ब्र
ज में कोटांन कोटही॥ तथा सखी सहेचरी गुप्त लीला संब
धनी जितनी हीं॥ तितने रूप धरि के तिन सबन के निकुंज

मंदिर में पधारि के सबन के मनोर्थ पूर्ण कीए॥ सो सगरी गोपीप
हजांनें जो हमारे ही पास श्री ठाकुरजी हैं॥ और काहू के निकट नांहीं
हैं॥ तातें अत्यंत प्रीति हृदय में उपजी॥ या प्रकार यह विरह प्रेम
को प्रसंग सर्वोपरि है॥ सो या प्रकार सब व्रजभक्तन को सुख
दे के पाछें प्रात काल भयो तब सगरी गोपीन के निकुंज प्रति
श्री ठाकुरजी आधीन होइ एक श्री स्वामिनीजी के निकट वि
राजे॥ पाछें श्री स्वामिनीजी की रतजी हरखभांनजी हुते तहां
पधारीं॥ और श्री ठाकुरजी परमानंद पाइ श्री यसोदाजी
हतीं तहां पधारे॥ पाछें सब मिलि के होरी के डांड पास संकेत
में आए॥ तहां श्री ठाकुरजी श्री स्वामिनीजी श्री बलदेवजी
सब मिलि के स्नान करि नाना प्रकार के शृंगार धराय सगरे भो
ग आरोगे॥ पाछें मधुमंगल श्री यसोदाजी के घर तें सामि
ग्री श्री रोहनीजी पें तें मांगि बांधि के लायो हतो सो मांगि श्री
यसोदाजी कें आगे धरी॥ तब श्री यसोदाजी ने कही जो मधुमं
गल तो ब्राह्मन है हम कैसें लेंइ॥ तब मधुमंगल ने कह्यो जो मैं
रंजो वस्तु है सो सब तुम्हारी दीनी है॥ तातें तुम क्यों संदेह कर

होरी तहो॥ मेंतोतुम्हारोघरकोहूं॥तुम्हारेघरकोजूठनसोंमेरी
१२४ देहप्रानपुष्टिभइहे॥तबरोहिनीजीनेंश्रीयसोदाजीसोंक
हीजोतुमआनंदमेंयहसामिग्रीलेहु॥यहमधुमंगलमे
रेपासतेंछलकरिकेलायोहे॥यहसामिग्रीतुम्हारेघ
रकीहे॥यहमधुमंगलवैसोहेजोपानमेरीहूहांलीक
राइहे॥तबश्रीयसोदाजीहासिकेंसामिग्रीकोंगोवभुला
इकेंमधुमंगलसोंकहीजोतुमहोसोअपनीपातरपहि
लेंलेउ॥पाछेंओरनकोंदेहिंगे॥तबमधुमंगलनेंकही॥
जोमेंरोब्राह्मनपनोंतोतुम्हारेपुत्रश्री[illegible]हेतिन
नेंसबखोयोइहमोकोंसबअपने[illegible]॥ता
तेंतुममोकोंकोनसदिनब्राह्मनकेकमें[illegible]होमें
तोओरकछूजानतनाहीं॥तुम्हारेपुत्रकी[illegible]छाक
मेंनित्यपावतहों॥ओरनित्यहीश्रीकृष्णकेसंगखेल
तहों॥मोकोंयहीअच्छीलागतहे॥तबश्रीयसोदाजी
नेंश्रीठाकुरजीसोंकहीजोतुमअपनीजूठनिमधुमं
गलकोंमतिखवायोकरो॥मधुमंगलब्राह्मनहे॥ओपु

न

नअूहीरहे॥तबश्रीठाकुरजीकहेजोमेंतोमधुमंगलकोंजू
ठननाहीदेत॥यहमधुमंगलहीमेरेहाथमेंतेंथारीमेंतें
पातरमेंतेंजोरावरीखातहेमेंकहाकरों॥ओरतुमहूकछू
कहोतोहमतोअपनेंजानिनाहीदेतहे॥तबश्रीयसोदाजी
मुसिकाइकेंचुपहोइप्रथमश्रीठाकुरजीकोंश्रीठकुरानी
जीकेंआरोगाइश्रीबलदेवजीश्रीरेवतीजीकोंआरोगाइ
पाछेंसब[illegible]गोपउपनंदआदिदेकेंहे॥ओरश्रीवृषभान
[illegible]घरतेंनानाप्रकारकीसामिग्रीआइसोसबमिलिकें
सब[illegible]॥नंदजसोदासगरेगोपगोपीवृषभानकीरत
[illegible]आदिसबभोजनकरिआचमनकरिबीरीसबनआ
रोगी पाछेंश्रीठाकुरजीश्रीस्वामिनीजीकीआरतीकरिश्री
बलदेवजीश्रीरेवतीजीकीआरतीकरि॥पाछेंश्रीवृषभा
नजीकीरतजीश्रीनंदरायजीसोंश्रीयसोदाजीसोंविदा
होइकेंश्रीस्वामिनीजीकोंललितादिकसखीनकोंसंगले
केंअपनेंघरपधारे॥ओरश्रीयसोदाजीहूंश्रीनंदरायजी
हूंश्रीठाकुरजीकोंश्रीबलदेवजीकोंमधुमंगलआदिओर

होरी· सखागोपिनसहितउपनंदसखागोपवृधबालकसबन
१२५ कूंसंगलेकेपधारे॥ सोसबपाछेंआपनेंआपनेंघरगए
तबललितादिकसखीनसोंश्रीस्वांमिनीजीनेंकहीजो
आजहोरीश्रीठाकुरजीकेसंगषेलनोहे॥ इहांश्रीनं
दरायसोहाजीपधारे॥ उहांश्रीकीरतजीश्रीवृखभांनजीप
धारे॥ तातेंलाजकरिकेंमेंहोरीनाहीषेली आजुसबनको
जीतनो॥ तातेंमेरोकेसरीपीतधुजा लेकेंश्रीठाकुरजी
केसन्मुखरोपो॥ सोश्रीस्वांमिनीजीकीकेसरीपीतधु
जाकरिललितादिकसखीननेंश्रीठाकुरजीकेसन्मुख
रोपी श्रीचंद्रावलीजीकीस्वेतधुजा श्रीयमुनाजीकीसखीननें
कहिकेंकिये॥ ललिताजीलालधुजाकिये॥ श्रीयमुना
जीकेभावसोंस्यांमधुजासखीनेंलिये॥ सोवजनके
भावसोंगुलाबीधुजा॥ औरसखीननेंभावकेधुजा
बेजनीलहरियाकेसरजीपित्ताडीआदिकोंरंगनकीरि
धुजाश्रीस्वांमिनीजीकीधुजाकेपाछेंरोपे॥ श्री
स्वांमिनीजीकीधुजाकेपाछेंश्रीचंद्रावलीजीकोपा
छेंश्रीयमुनाजीको॥ पाछेंकुंमारिका॥ पाछेंसबस्वांमिनीकी
सखीनकीसहचरीकेदूतीके॥ याक्रमसों॥ यामेंयहजताए॥ जोश्री
स्वांमिनीजीकेरसकेपाछेंसबनकोंरसकोप्राप्तिहे॥ याप्रकारश्री
स्वांमिनीजीकेआदिसबनकीधुजाकीसोभाअनेकप्रकारबनी
सोश्रीठाकुरजीयाप्रकारधुजानकूंदेखिकेंमधुमंगलसोंकहे॥
जोतेंदेखमेराहस्योधुजाहेसोपीतधुजाकेसन्मुखरोपिदे तबत
केलमधुमंगलडामश्रीठाकुरजीकोहस्योधुजालेश्रीस्वांमि
नीजीकेपीतधुजाकेसन्मुखरोपदीयो॥ ताकोभावयहहेजो
पीतरंगश्रीस्वांमिनीजीआदिसर्वेगोपीव्रजकी॥ औरस्यांमरं
गश्रीठाकुरजीकोसोदोऊमालिकेहस्योहोतहे॥ तबश्रीस्वांमि
नीजीनेंमधुमंगलसोंकहीजोतूमेरेधुजाकेसनमुखक
हाकारनसोंरोप्यो॥ तबमधुमंगलनेंकह्योजोपीतधुजाकेमु
खियासोंहरेधुजाकोमुखियाको आजुमेंब्याहकरेंगो॥ काहेतें
मेंब्राह्मनहों॥ मेरोभैयाकुंवारोहे॥ सोआजुब्याहहोइतोआछो॥ यहसुनिकेंसखागोपगोपीश्रीठाकुरजीहसें॥ तबलालि
तादिकसखीबोलीमधुमंगलतूबडोढीठहे॥ तातेंसबतेंपहिलें

हरी· ताहीकोंरिझिरकनोंहे ॥ तेरीसोभापाहिलेकें राधनीहे ॥ यहसुनि
२६ कें मधुमंगलतत्कालनिर्तकरनलाग्यो ॥ औरकह्योजोबडेबा
पकीबेटीतबहीजानूंगोजबमेरीसोभाकरोगी ॥ याप्रकारसों
अनेकचटकमटकसोंनिर्तकरनलाग्यो ॥ आतेंचारिपांचस
खीदोरिकें मधुमंगलकोंपकरिकैंलेगई ॥ तबमधुमंगलश्री
ठाकुरजीकोंश्रीबलदेवजीकोंपुकार्योजोमोंकोंवेगिहीछुडा
वो ॥ इहांसबसखीनसाहितश्रीठाकुरजीश्रीबलदेवजीसबह
सेंबोलेकोईनांही ॥ तबमधुमंगलनेजान्योजोमोंकोंकोई
छुडावेगोनांही ॥ तबश्री[illegible]जीआदिसबनसोंकह्यो
जोमोंकोंतुमछोडिदेउगेतोमेंश्रीठाकुरजीकोंपकराइदेहुं ॥ त
बश्रीस्वामिनीजीहासिकेंमधुमंगलकोंछोडिकेंकहीजोतू
श्रीठाकुरजीकोंपकरावेतोइच्छाभोजनमेंतोकोंकराऊंगी
जोमांगेगोसोईदेहुंगी ॥ तबमधुमंगलनेंकहीजोअबही
तुरतहीलेंआऊंगो ॥ परिमेरेसंगकरिदेहु ॥ तबश्रीस्वामिनी
जीनेंललितासोंकहीजोतूथोरीसीदूरिमधुमंगलकेसंग
जाइबांधछलकरिकेंश्रीठाकुरजीकोंपकरिकेंह्यांलेआउ ॥

हरी॰ भूखनदेंहें॥ तवललिताहूनेंमधुमंगलसोंकहीजोतूमोकों
१२७ धुजावेंआगश्रीठाकुरजीकोंपकरावेंतोमेंहूंतोकोंनांनाप्रका
रकीसामग्रीवस्त्रआभूषनदेंहूं तवमधुमंगलनेंकह्योजोए
सोईकोतककरिकेंअवदेखोधुजावतहों॥ तवश्रीठाकुरजीलल
लिताकोंपकरिकें मुखमेंगुलालमांडिकेंकेसरिअंगराजा
सोंधरिकें मुखमांडिकें सर्वांगभावसाहितपरसकीएहें॥
तवललिताभीतरतेंतोवहुतहीप्रसंनभईजोभलीभईमें
पकरीगईश्रीठाकुरजीकेअंगकोतोपरसभयो॥ औरऊप
रेमनकहीजोयहकहाकीयोमधुमंगलमेरीलाजगमाई
पाछेंमधुमंगलनेंश्रीठाकुरजीसोंकह्योजोमेंयातुमरीम
नोरथपूरनकरिएककांधेपरमेरेपरतुमऔरएककांधे
परललिताकोंवेगाइमेंहारिकेंधुजाकीफेरीदेतोमेरोव्याह
करों॥ तवश्रीठाकुरजीनेंकह्योजोफेरीदेतमेंगोपीसवदोर
केंपकरेंतोमेरीतेरीदोऊनकीहांसीहोइ॥ तवमधुमंगलनें
कहीजेपामेरेसंगतुमकोंकाऊपरगातामेरोचाहेसोकरि
यो॥ देखोमेंजकेलाहीसबगोपीनकेंजीतिकेंललिताकोंउ

क

गयलायो॥ तातेंमेरेआगेंकोउगोपीतेरेनिकटआवेनांहीं॥ जो
कदाचितकोउगोपीआवेतोचिंतानांहीं॥ मेंतोकोंछलकरि
केंवचायदेंहुंगोजांमेंतूत्रसनहोइगोसोईकरूंगो॥ तवश्रीठा
कुरजीमधुमंगलकेकांधेपरविराजे॥ पाछेंएकओरलालि
ताहुवेगीतवमधुमंगलधुजाकेनीचेंजाइसातफेरीकरिकें
गोपीनकीदिसाकोंदेख्योआछीभांतिश्रीठाकुरजीके
चरनतेंवंदपकरिकें॥ तवश्रीठाकुरजीकहेजोमेंयामधुमं
गलतोमोहीसोंछलकरेगोयहवातआछीनांहीं॥ तवमधु
मंगलकह्योजोभेयामेंतोकोंजोननहोंतूमेरोजीवलोहिगो
भारक्योंवढावतहे॥ तवश्रीठाकुरजीकहेजोपाछेंकोंफिरि
नांहींतोओरदावेगो॥ तवमधुमंगलनेंकह्योजोमेंपाछें
कोंतोसर्वथानाफिरोंगोतिहारेमनमेंआवेउतनोभारकरिकें
मेरोजीवलेहु॥ तवश्रीठाकुरजीनेंओरहूभारवढायकेंदाव्यो
तवमधुमंगलसोंचल्योनगयोगोपिनकोंपुकारयोजो
वेगहीआइकेंश्रीठाकुरजीकोंपकरो॥ उततेंगोपीसवदोरीं
औरश्रीठाकुरजीनेंओरहूभारकरिकेंदाव्यो॥ सोमधुमं

गलसरदीहोइआयी॥ धोवतीबिगरगई॥ परंतुश्रीठाकुरजी
कोंपकरिकेंबांधिगयो।छोड्योनांहीइतनेहींमेंसबगोपीदो
रिआइकेंश्रीठाकुरजीकोंपकरिलीयो॥ तबमधुमंगलनें
कह्योजोमोकोंवडोदुःखभयो॥ तबसबगोपिनकहीजोभ
लेंमधुमंगलतूवडोसामर्थवांनहें॥ तोकोंदुखकहाभयो
तबमधुमंगलनेंकह्योजोश्रीकृष्णनेंऐसोभारमेरेऊपर
दीयोजोमोकोंवमनभयोधोवतीसगरीबिगरिगई॥ तब
सगरेव्रजभक्तनसखानसहितश्रीठाकुरजीहंसे॥ तबगोपी
ननेंकहीजोमधुमंगलतूवडोनिलजहे॥ अबतोआपकें
स्नानकरिआवो॥ जोतुमकोंसामिग्री[illegible]
इ॥ तबमधुमंगलनेंकह्योजोमोकोंअबतु[illegible]नां
हींचाहिये॥ विनहींलीयेमेरीयहदसाभईहे॥ औरज
वलेंहुगोतबकहाजानेंमेरीकोनदसाहोइगी॥ तापरंतु
तुममोकोंनिलजकहो॥ तबश्रीठाकुरजीनेंश्रीचंद्रावलीजी
सोंऔरललितासोंकह्योजोपहमधुमंगलकूंगहेरवर
चूनाहीफस्यो खरचूकोनांमलेकेंखलमेंतेंभाजिवेकोंय

हभयोहेसोमेंकहिदीयो॥ अबतुममधुमंगलकोंगयोजानों
तबश्रीचंद्रावलीजीनेंऔरललितानेंमधुमंगलकोंपक
र्यो॥ तबमधुमंगलकोंरिसछूटीसोधोवतीखोलिकेंदूर
डारदई॥ तबललिताचंद्रावलीजीइहांतेंभाजिगई॥ तबम
धुमंगलललिताचंद्रावलीकेसन्मुखदोरिकेंकह्योजो
तुमनेंश्रीकृष्णकेवचनमांनेंमोकोंनंगोकीयोसोतुमहीं
मोकोंनागोकीनहींधोवतीदेहु॥ तबललिताचंद्रावलीजी
तोसीलाजपाइकेंभाजिगईं॥ कहीजोयहनिगोडोकहूं
पकरलेइतोहमारीहासीहोइ॥ तबमधुमंगलनिलज
होइकेंहोरीकीगारीअनेकप्रकारकीदेंनलाग्यो॥ तबश्री
चंद्रावलीजीऔरललिताजीनेंअपनीसखीनसोंकह्यो॥
जोयामधुमंगलकोंपकरिकेंकछूकसीखदईचाहिये
तबसखीनेंछिपकेंपीछेतेंआइमधुमंगलकोंपकरिकें
गरेंमेंवडीएकढुंढुभीडारिकेंपागउतारिकेंयरऔरपी
गसोंबांधितेंलकीअनेकगागरिलेनखसिखतेंसखिननें
न्हवायो॥ तबसगरोसरीरस्यामरंगहोइगयो॥ पाछेंअबी

रयलालाछिरकिकेंअनेकप्रकारके चित्रअंगमेंवनायअ
नेंकरुष्णको रिनकियो॥ सोकृष्णफोरनमेंमधुमंगल
कोजनेंऊकूटिकेंपाइनमेंजाइउरच्यो॥ तवमधुमंगलनें
रिसायकरिकह्योजोआजुमेंतुम्हारोपिताहोइकेंलग्यो
हूं॥ सोदेखोतुमअपनेंपिताकौंसिंगारकेंसोकरतहो॥ तव
यहवानीगर्वसाहितमधुमंगलकीसुनिकेंगोपीसवअ
पंनकोंपिकें॥ परस्परकहनलांगीजोआजुयामधुमंग
लएसोकरेजोफेरिहमारेसन्मुखनिलजहोइकेंकहू
नवोलें॥ सोसखीनेंउरद्धकेचूंनमेंगुरकोंपानीमेंगोंद
जारिकेंसगरकेसमेंआरिसगरेअंगमेंलगाइ॥ गेरूकोंसें
लगाइकानननसोंदोऊऔरदोरूरी वलनी॥
वांधिमाथेपरएककूटोसूपवांधिके एक ... कर वेग
रिगरेंमेंप्पपेमाऊपरांनकीमालापाहिराइ॥ तवमधुम
गलनेंअपनेंगरेंमेंडुंडुनीहुतीसोहालेवजाइकेंनि
तकरतप्रकारिकेंसगरेव्रजभक्तनकोंऔरव्रजवासीनकों
सुनायकेंकह्योजोआजुमेरेंभैयाश्रीकृष्णकोसिंगारीगो

पीनसोंव्याहहोइगयोहे॥ सोमोंकोंयहसवपहरावनीदइहें॥
औरकाहूकोंचाहियतोलेहु॥ फेरिअैसोसमोंनपावोगे॥ पा
प्रकारमधुमंगलकोदेखिकेंमाथेकोमरकटहूतोसोऊ
अनेकभांतिकारिनितेंकरनलाग्यो॥ ताकोंदेखिकेंसगरे
व्रजवासीचहुतहेंसें॥ तवश्रीवलदेवजीनेंमधुमंग
लसोंकह्योभैयापायहपहरावनीतुमहीकोंचाहिये॥ तुम
हांलतहौतुमहीकोंसोहियतुहे॥ यहमधुमंगलकेरव्याल
मेंसवहीमस्तहोइगएनिरन्ते॥ तवश्रीस्वामिनीजीसारवीन
साहिताछिपकेंश्रीठाकुरजीकोंश्रीवलदेवजीकोंपकरिकें
मुरलीपीतांवरछीनलीयो॥ सोमुरलीपीतांवरकोंकहा
रनकहाजो॥ मुरलीसगरेव्रजभक्तनकोंपरवसकरिलि
ए॥ तातेंछीनीनी॥ औरपीतांवरमायारूपअंईंछादनकर
तहें सोऊदूरकीयो॥ औरललिताजीनेंश्रीवलदेवजीकी
आंखिनमेंअंजनदीयो॥ काहेतेंश्रीवलदेवजीदेवरूपम
र्यादासाहितहें॥ सोअंजनादियतेंयहरहस्यलीलाकों०
ग्याननहोइजेसेंलुकअंजनदीयतेंहोइयेदीसेनाहीं॥ जव

होरी- श्रीठाकुरजीश्रीबलदेवजीपकरेगए॥ तबललितासंद्रावली
२.३० जीनेश्रीबलदेवजीकोपीतांबरछीनलीयो॥ तबमधुमंगल
नेश्रीस्वामिनीजीसोंकहीजोश्रीठाकुरजीकीओरश्रीब
लदेवजीकोमेरीसौंहिसाकरो॥ तबश्रीठाकुरजीकहेजोम
धुमंगलअबहीतांईतेहोरिनाहीमानी॥ तबएकसखीअ
पनोमुखमंदिपनारेकीकीचएकगागरिभरिलाइकें
मधुमंगलकेऊपरडारीसोकछूएकतोमधुमंगलकेऊप
रपरी॥ औरकछूएकमधुमंगलछीनसखिनकेऊपरडा
रिगागरिअपनेपासराखो॥ तबश्रीठाकुरजीश्रीस्वामि
नीजीसोंविनतीकरिकहेजोमेंतुम्हारेहीभावतेंरूप
हिरवेकोंदेहमेरीहांसीहोइगी॥ तबश्रीस्वामिनीजीअ
पनीचूंनरीमेंतेंएककछूकफारिकेंदयो॥ सोतबश्रीठाकु
रजीनेकरिकेंपहिरयो॥ सोपहायहभावहेजो॥ पीतांबर
मायारूपहे॥ तहांइरिफिरे॥ श्रीस्वामिनीजीनेअपनो
रसगोपकरिराख्यो तबश्रीठाकुरजीनेसेनहीमेंमधुमं
गलसोंकहेजोकीचगागरिमेंरखीहेसोदाऊजीपरडा

रिदेहु तबमधुमंगलपीछेतेंआयकेंकीचकीगागरिश्रीबल
देवजीकेऊपरढोरी॥ तबश्रीबलदेवजीरिसाइकेंमधुमं
गलकोपकरिबेकोदोरे॥ तबमधुमंगलभाजिकेंकह्योजो
मेरेऊपरक्रोधक्योंकरतहो॥ मोसोंतोश्रीकृष्णनेकही
तबमेंकीचतुम्हारेऊपरडारीहे॥ सोमधुमंगलतोभाजिग
योपकरननपायो॥ तबश्रीठाकुरजीकेश्रीबलदेवजीनिकटआ
एकेंतबतोतूवाचूंनरीकोंकछूकपहिरकेंलाजसाहितबेग्रोहे॥
औरमेंनागोकेंडोलतहोंतापेंमधुमंगलकोंरिसाइकेंमो
केकहिसोंन्हवायो॥ तबश्रीठाकुरजीनेश्रीबलदेवजीसों
कह्योजोसुनोंदाऊजीगोपनकोसनेहमोंपेबहुतहे॥ काहे
तेंमेरीमुरलीपीतांबरसबछीनलेतहें॥ परंतुमेंउनसोंक
छूकहतनाही॥ तुमकाहूकेऊपरक्रोधकरतहो॥ काहूकों
मारिबेकोंदोरतहो॥ तातेंगोपीतुमकोंवस्त्रनाहींदेइगी॥
जैसोगोपनकोसनेहमेरेऊपरहे॥ तेसोसनेहश्रीरेवती
जीकोतुम्हारेऊपरहे॥ तातेंतुमउनकेपासजाइकेंवीन
तीकरो॥ तथापायनपरो॥ तबवेदरदविचारिकेंदेइगी॥ त

हरी · वललितानेकहीजोमोकोतोश्रीरेवतीजीनेसिखाईहती
२३१ तवमेंश्रीवलदेवजीकेवस्त्रछीनेंहें॥ नातरउनोमोमेंक
हासामर्थहोताहीसमेंमधुमंगलनेकह्योजोमोहूंको
श्रीरेवतीजीनेंसिखायो॥ तवमेंश्रीवलदेवजीकेरूप
रकीचडरी॥ औरमैयाश्रीकृष्णसांचकहतहें॥ देखोतोमें
कवकोनांगोडोलतहूं॥ सोयहराजाकीवेटीहुइगढीहस
तहे॥ मोकोंवस्त्रकोटूकहूंनाहीदेतजोहोंपहरों॥ याकोंपिता
केघरकोअभिमांनहे॥ सोमैयाआजुयाकोअभिमांन
दूरिकरोंगो॥ तवश्रीवलदेवजीश्रीरेवतीजीकेसन्मुख
गए सोश्रीरेवतीजीश्रीवलदेवजीकोंदेखिकेंहुलसा
पाइकेंकहीजोतुममेरेनिकटमातिआवो॥ तवनांगहोइ
सोमेरीहांसीहोइगीतवश्रीवलदेवजीकोंधकारिकेंबोले
जोआजुतेरोअभिमानसवदूरिकरोंगो॥ तूराजाकीवेटी
हे॥ सोतेरेमनमेंवहुतअभिमांनहे॥ तातेंतूमोकोंवस्त्रनां
हीदेतहें॥ यहकहिकेंश्रीवलदेवजीजाइकेंश्रीरेवतीजीकूं
पकरे॥ तवश्रीरेवतीजीवहुतलजामांनहोइनेवनमेंज

लगरिकेंश्रीठाकुरजीसोंसेनहीमेंकहीजो॥ अवमेरीलाज
तुम्हारेहाथहे॥ तातेंतुमवेगिमेरीलाजराखोमेंतुम्हारीस
रनहों॥ तवश्रीठाकुरजीदाउश्रीवलदेवजीकीभुजापकर
केंकहेजोदाऊजीतुमतोपरमचतुरहोमर्यादाकेरक्षकहो
सोसवगोपगोपीनकेआगेउघारीजनकोंपकरतहोसोयावा
तसोंतुम्हारीवडाइनांहींहें॥ तवश्रीवलदेवजीचकितहोइ
कहेजोहेश्रीकृष्णतुमनेंहीतोमोकोंपढायाहो॥ औरअ
वतुमहीमोकोंसिक्षाकरतहो॥ तातेंअवतुमहीमोकोंकछू
पहिरवेकोंदेहु॥ तवश्रीठाकुरजीश्रीरेवतीसोंकहेजोभाभी
जीदाऊजीतुमसोंवीनतीकरतहें॥ सोतुमइनकोंकछूपहि
रवेकोंदेउतातेंदाऊजीकीलाजरहे॥ तवश्रीरेवतीजीनेंअ
पनीसाडीफारकेंटूकदयो॥ सो लेकेंश्रीठाकुरजीश्रीव
लदेवजीसोंकहेजोदाऊजीयहवेगिपहिरलेहु॥ तवश्रीव
लदेवजीतानियांकरकेंपहरनलागे॥ सोआछोनयोआ
गेतेंखेंचेंतोपीछेतेंछूटजाय॥ जोपाछेतेंखेंचेंतोआगें
तेंछूटजाइ॥ तवश्रीवलदेवजीश्रीठाकुरजीसोंकहेजोमैं

होरी- याश्रीकृष्णयहसाडीकोहूंकतोओढ्योनयो॥ तबश्रीग
१३२ कुरजीकहेजोदाऊजीवालोमातियहरतनोहूंहूंकतोवडे
भांगितोमिल्योहे॥ तातेंएकहाथआगेराखेरहोऔरएकहाथ
पीछेराखेरहो॥ तबश्रीबलदेवजीऐसेंहीकीएं॥ दाऊहाथप
सोंदाऊऔरदाबेरहे॥ तबसगरेब्रजवासीगोपगोपीहंसे
तबतापाछेंश्रीठाकुरजीललिताकेपासतेंअनेकभांतिन
कीसामिग्रीलेकेंकहेजोदाऊजीआरोगोगे॥ तबश्रीबलदे
वजीकहेजोभैयाभूषतोबहुतलागीहे॥ परंतुमेरेदोऊ
हाथतोआगेंपाछेंलागेंहें॥ तबश्रीठाकुरजीकहेजोदा
ऊजीचिंताकहाहे॥ तुमदोऊहाथंन[illegible]रहो॥ मेंअ
पनेंहाथनतेंतुमकोंआरोगाइदेंहुगो॥ तबश्रीबलदेव
जीकहेजोबहुतआछो॥ तुमहीआरोगाइदेहु॥ तबश्री
ठाकुरजीश्रीबलदेवजीकोंआरोगावनलागे॥ सोयहसो
भादेखकेंश्रीस्वामिनीजीसखिनसहितहसीऔरगो
पगोपीसखाश्रीठाकुरजीश्रीरेवतीजीसगरेब्रजवासी
सबहसें॥ तबश्रीबलदेवजीकोंलाजलागी॥ सोघरमें

तेंमाजिश्रीयसोदाजीकेपासघरमेंआए॥ तबश्रीठाकुरजी
मनमेंविचारेजोदाऊजीघरमेंगएहें॥ सोश्रीयसोदाजीसों
रूसीसांचीलगावेंगेतामोंकोंश्रीयसोदाजीबाहरनिकस
ननदेंइगी॥ तातेंमेंहूंघरकोंचलों॥ तबश्रीठाकुरजीहूंघर
कोंचलेसोश्रीयसोदाजीकेपासआए॥ पाछेंमधुमंगल
हूश्रीयसोदाजीकेपासआयो॥ सोश्रीयसोदाजीतीनोंन
केमुखसोंयहहांसिहासकेंकहीजो॥ हेश्रीबलदेवजीचखतु
म्हारेमनकन्हैयाकेहुतेसोकहांकिऐमेंतोतुम्हारेअंगों
केंअपनेवारेकन्हैयाकोंपगावतिहों॥ सोतुमहींअपनीय
हसोभाकराएतोमेरेकन्हैयाकोंकेसेंआछेंराखोगे॥ त
बश्रीबलदेवजीकहेजोमैयाजीयहसबसोभा भजीहेसो
तेरेकन्हैयाकेगुनहें॥ इननेंगोपिनकोंसिखाइदयो॥ सो
सबगोपीमालिकेंमेरेवस्त्रछीनलीये॥ पाछेंतेंकन्हैया
हूकेवस्त्रछीनलीने॥ तबश्रीठाकुरजीश्रीयसोदाजीसों
कहेंजोअरीमैयादाऊजीतोरूवेहें॥ जोदाऊजीआजहो
रीकेषेलमेंबडेहेगएहोइंगे॥ सोपाहिलेतोअपनेंआर

रवनवस्त्रउतारदीए॥ पाछेंमोहूकोंपकरिकेंमेरेहूंआभूष
नवस्त्रउतारदीए॥ ताहीसमयश्रीस्वामिनीजीअपनीस
खीलालताविसाषाकोंसंगलेकेंश्रीयसोदाजीपास
आइकेंपगलागी॥ तवश्रीयसोदाजीहृदयसोंलगाय
केंअसीसदइजोअखंडसुहागतुम्हारोहोइ॥ तवश्रीय
सोदाजीलालतासोंकहीजोहेलालितातेंमेरेकन्हैयाकी
ऐसीसोभाकरी॥ अवमेंतेरेसंगकवहूंनजानदेहुंगी॥ त
वलालतानेंकहीजोभलेश्रीयसोदाजीअपनेंश्रीवलदे
वजीकों – तोंमनेंनांहींकरतहो॥ औरमेंरेऊपरतोसकर
तहोमेंतोंअपनीचूंनरीकोनइीसाडीवासितेंदाऊकों
हूंकफारदयोहे॥ सोदाऊजनेंपहरेहें॥ तवश्रीमधुमंगल
नेंश्रीयसोदाजीसोंकह्योजोतुंमलालताकेंकहापाषी
जतहोयहतुम्हारेपुत्रश्रीकृष्णकीओरमेरीअपनीहूंसो
भातुम्हारेश्रीवलदेवजीनेंकरीहे॥ औरकाहूकीसांमर्थ
हेसोकरिसकें॥ तवश्रीयसोदाजीकहेजोभलेंश्रीवलदे
वजीहोरीमेंवावरेहोइगयेहो॥ अवमेंतुमसोंकहाकहों

औरहोइतासोंकहो॥ तूनितहीवासुनीपांनकरिकेंमत्तर
हतहेदेहकीसुधिनांहीरहतहे॥ तातेंमनमेंजोतरंगउठी
तसेंहीकीयो॥ यहसुनिकेंश्रीवलदेवजीरिसकरिकेंकहेजो
हेश्रीयसोदाजीतुम्हारोपुत्रवडोसांचोहे॥ औरललिताम
धुमंगलआदयेवडेसांचेहें॥ एकमेंहीकूंगहूं॥ तातेंअव
तुमवालोगाली॥ तुंमआपुसमेंकूंवोलतिहो॥ मोकोंसुं
निसुनिकेंअंगमेंरिसउपजतहे॥ तवश्रीयसोदाजीनेंहं
सिकेंश्रीकृष्णकोंआछीभांतिन्हांनकराइवस्त्रआभू
षणपहिराय॥ पाछेंश्रीवलदेवजीकोंन्हांनकरायवस्त्र
आभूषनपहिराय॥ पाछेंमधुमंगलकोंगोपनकोंल
गाइदएसोआछीभांतिदेहभीजकेंन्हांनकरायवस्त्र
आभूखनपहराए॥ पाछेंनानाभांतिकीसांमग्रीसें
नभोगकीश्रीठाकुरजीकोंश्रीस्वामिनीजीकोंअरोगाइश्री
वलदेवजीश्रीरेवतीजीकोंअरोगाइगोपगोपीसगरेव्रज
वासीनकोंअरोगाइवीरादेकेंमेवामिगाईवस्त्रआभूष
नश्रीस्वामिनीजीलालितादिकसवसखीनकोंदेकेंभली

भो[illegible]तिविद्धप्रकारकहीजो॥ औरहीवेगिपधारियो॥ तबस
खिनसहितश्रीस्वामिनीजीश्रीकीरतजीकेपासपधारीं
उहांश्रीयसोदाजीसबनकोंविदाकरिकेंश्रीठाकुरजीश्री
बलदेवजीकोंप्यारेंप्यारेसेंनमंदिरमेंसिज्यानपरसेंनकरा
ए॥ उहांश्रीकीरतजीश्रीस्वामिनीजीकोंआरतीकरिगोद
मेंलेनानाप्रकारकीसामग्रीसाखिनसहितअरोगाइपा
छेंआपअरोगिसुंदरसेज्याबिछायश्रीस्वामिनीजी
कोंसंगलेकेंसेंनकीएं॥ ताहीसमयआईरात्रिकोंश्रीस्वा
मिनीजीकोंश्रीठाकुरजीकेहोरीकेखेलकोरंग[illegible]स्वरू
पकोस्मरनहोइआयो॥ सो[illegible]तत्काल[illegible]विरहज्वा
रभयो॥ तबसगरोअंगतातोहोइकेंअग्निसीज्वालाउ
ठनलागी॥ सोसेज्याऊपरतेंउतरिकेंकीरतजीनेंकहीजो
हाइदैय्यमेरीप्रानप्रियाबेटीकोंकहाभयो॥ जोमेंपास
सोवतीहतीसोमोकोंएसीविरहकीआंचलागी॥ ताहीस
मयललिताविसाखाआदिसाखिनकोंबुलाइकेंकीरत
जीनेंकहीजोअबमेरीबेटीकोंहोरीकेखेलमेंमातिलेजै

यो॥ काहेतेंकाहूकीदृष्टखोटीलागीहेंअबमेंकहाकरों॥ कों
नकूंदिखाऊं॥ कहांजाऊं॥ कोंनरोगयाकोंप्रगटभयोहे॥ तब
ललितानेंकीरतजीसोंकहीजोतुमनेंकदूरिह्वेजाउतोमेंइ
नकोंअंगदेखिकेंबूझिलेहुं॥ तबकीरतजीचोबारेतेंउतरिकें
नीचेंपधारीं॥ तबललिताविसाखानिकरजायकेंश्रीस्वा
मिनीजी[illegible]कानमेंकहीजोश्रीठाकुरजीतुम्हारेपासआ
वतहें॥ सोसत्यबचनकहेहें॥ यहसुनतहीविरहसबदूरि
होइअंगअंगसीतलहोइआंखिउघारिकेंदेखेंतोललि
ताविसाखाठाढीहें॥ तिनसोंकहीजोअबश्रीठाकुरजीक
बमिलेंगे॥ तबललितानेंकहीजोअबतुम्हारेपासपधरा
एंलावतिहों॥ पाछेंकीरतजीकूंबुलायकेंललितानेंकही
जोतुममहीकोंभ्रमभयोहेतुमअबदेखोतोसही॥ तबकी
रतजीआइकेंदेखेंतोश्रीस्वामिनीजीकोअंगअंगसी
तलहेपरमसुखरूपहें॥ तबललितासोंकीरतजीनेंकही
जोयहकहा॥ अबहीतोयाकोअंगऐसोतातोभयो॥ और
अबहीसीतलभयो॥ तबकीरतजीसोंललिताजीनेंकही

जोतुमतोभोरीहो ॥ यहतिहारीबेटीकोदुःखतोसपनेहूंमें
नांहीहै ॥ सदाएकरसआनंदमयहै ॥ औरतुमकोघरकी
नानाप्रकारकीफिकरिचिंतारहतहै ॥ सोरोगतोतुम्हारी
देहमेंहै ॥ ताततुमअरुपानताकरियामेदेषतहोऔरतुम
सोकहिनांहीसकतहो ॥ तुम्हारेसरीरमेंमनमेरोगहै ॥ ता
तेतुमइनकोसंगलकेसेनमतिकरो ॥ कहूंतुम्हारोरोग
इनकोलागेगोतोकैसीहोइगी ॥ औरसाखमेंऐसेकहे
हेजोपांचबरसतेबेटीतपावेदाहोयतोताकोपासले
नकरेतोमहादोसहै ॥ सोतुम्हारीबेटीतोआठबरस
कीहोनआईतुमपासलेकेसेनकियोसोदोसभयोहै ॥
तबयहसुनिकेकीरतजीललिताकेपाइनलागीके
हीललितातूसगरीबातमेंचतुरहै ॥ मेरोरोगतोअब
है ॥ सोमैंयामेदेषतहोंऔरमेंपासलेकेसोईसोसा
स्वउ[illegible]लंघनहूंमहादोसरूपहै ॥ तातेमोकोयहदुःखभ
योअबललिताविसाखातुममेरीबेटीकोअपनेपास
हीनित्यसेनकरावो ॥ तामेंमेरीबेटीसुखपावेसोईतुम

कहियो ॥ तबचित्रसारीमेंललिताविसाखाश्रीस्वामिनीजी
कोसेनकराए ॥ औरकीरतजीअपनीसिज्यामंदिरमेंजहां
श्रीवृखभानजीसहितसेनकीए ॥ इहांश्रीस्वामिनीजीललि
ताऊपरबहुतप्रसन्नहोइकहीजोललिताभलीचतुराईकरी
निसकोदुःखदूरिकीयो ॥ पाछेंललिताकोअपनेकंठकीमो
तिनकीमालापहिराइकेकहीजोअबश्रीठाकुरजीमिले
तोसगरेसुखरूपहोइ ॥ तबललिताविसाखाबरसानेकीकुमार
गउतरकेश्रीठाकुरजीकोपधराइलाईं ॥ पाछेंबनमेंपधा
रिनानाप्रकारकेरासविलासकरिकेपिछलेपहरअपने
घरनमेंपधारे ॥ पाछेंभोरभयो ॥ तबश्रीस्वामिनीजीस्ना
नकरिकेभोजनकरिसबसाषिनसहितासिंगारकरिहोरी
कोसबसाजलेसमाजसहितश्रीवृखभानजीकेघरआईं
इहांश्रीयसोदाजीश्रीस्वामिनीजीकोलेभलीभांतिपध
रायपाछेंश्रीठाकुरजीश्रीस्वामिनीजीकोस्नानकराय
नानाप्रकारकेसिंगारकरिसिंगारभोगअपनेमुखगोपीव
ल्लभकोआरोगायो ॥ पाछेंश्रीयसोदाजीनेराजभोगआ

होरी तेगायो॥ पाँछेंताऊपाछेंसखाग्वालगोपीसखीश्रीबल
३६ देवजीआदिसबव्रजवासीनकोंआछीभांतिभोजनक
राए॥ पाछेंदोऊस्वरूपसमाजसहितहोरीकेडांडेपास
आए॥ तबदोऊदिसकीपिचकारीचलीं॥ पाछेंनानाप्रका
रकेगुलालअबीरअनेकरंगकेदोऊदिसतेंउड़े॥ सोआ
काससबछाइकेअंधेरोहोइगयो॥ तबसखीदोऊदिस
तेंदोरिकेसगरेसखनकोगोपनकोश्रीबलदेवजीकोलि
जोइश्रीठाकुरजीकोअबकेलोफारिकेंपकरलाईं॥ तबल
लिताविसाखाआदिसबसखीगुलाललाछि[illegible]लागी
कोऊअनेकरंगकेअबीरछिरकतहें॥ कोऊकुमकुमा
मारतहें॥ कोऊगेंदुककोऊपिचकारीकोऊ[illegible]जा॥ को
ऊचोवा॥ कोऊकेसरकुसमकोरंग॥ कोऊतेल[illegible]कोऊफु
लेल॥ याप्रकारछिरकतकेंश्रीठाकुरजीकोघररा
पलीयो॥ तोऊकोऊसखीमानतनाहीं॥ तबश्रीठाकुर
जीबहुतअकुलाने॥ सोश्रीस्वामिनीजीदेखकेतत्का
लआपहस्तमेंजलकीझारीलेकेंसबसखिनकोंहस्तक

मलडारकेंश्रीठाकुरजीकेनिकटआईअपनेंहृदयसोंल
गाइजललेकेंअपनेहस्तकमलसोंश्रीठाकुरजीकोमुखा
रविंदधोइ॥ अपनेकोमलअंचलसोंपोंछिकेंगमेंभुजा
मेलिकेंअपनीअत्तरीपरबेगारिकेंमधुरबानीबोलींअहो
हेप्राननाथआजुतुमनेबहुतहीदुःखपायो॥ येसखीज
गसगरीअभिमानमेंभरीहें॥ गवांरहें॥ कछूसनेहकोलेस
हूनाहींहें॥ तातेंऐसीनिरदईहैकेंयाभांतितुमकोछिरक्योहे॥
पाछेंसखीसबसकुचपाइकेंआगेंठाढीहें॥ तिनसोंश्री
स्वामिनीजीनेंकहीजो॥ मेरेप्राननाथश्रीठाकुरजीपरम
सुंदरसुकुमारतिनसोंतुमसगरीहोरीकेखेलनजोगनांही
हो॥ केबलगंवारसर्वांगहो॥ तातेंआजुश्रीबलदेवजीआदि
सखागोपहेंतिनसोंहोरीखेलोकरो॥ मनआवेतेसेंहींउ
नकोंछिरकोमेंनेंकहीहीश्रीठाकुरजीसोंखेलोंगी॥ में
हींप्रीतसोंछिरकोंगी॥ तबश्रीठाकुरजीश्रीस्वामिनीजीसों
कहेजोआजुसखीनेमोकोंबहुतहीअकुलायो॥ परंतुतुमनें
दोरिकेंमेरीरक्षाकरिकेंमोकोंबचायो॥ तातेंतुम्हारोएकय

हउपकारहे॥ ताकोंमेंपलटोदेवेमेंसांमर्थनांहीहों॥
तातेंआजुतेंमेंतुम्हारेसंगहीहोरीसदांखेलोंगो॥ याप्र
कारसनेहकीवार्तापरस्परकरतहेंगलवांहीदीयें॥ पह
किरनरसजांनों॥ अवसारवनेजांनीजोश्रीस्वांमिनीजी
हमपरअप्रसंनभईहें॥ सोहमारोअवकहूंगिकांनोंना
हीं॥ तातेंअवएसोउपाइहोइजोअववेगिप्रसंनहोइतो
हमारोजीवनसुफलहे॥ पाछेंललितादिकसखीनाना
प्रकारकीसांमिग्रीथारमेंधारिलाई॥ सोतेऊसवसखी
तपूर्वकआरोगिआचमनकरिवीरीआरोगे॥ पाछेंश्री
स्वांमिनीजीनेंसखीनकोंआग्याहीदीनीतुमश्रीवल
देवजीकोंऔरसगरेसखनकोंपकरिलावो॥ तवसखी
प्रसंनहोइकेंकोंपकरिकेंसखनसाहितश्रीवलदेवजी
कोंपकरे॥ सोललितादिकसखीश्रीवलदेवजीकूंपकार
कें श्रीठाकुरजीकेंऔरश्रीस्वांमिनीजीकेंआगेपकरि
लाई॥ तवश्रीवलदेजीनेंश्रीस्वांमिनीजीसोंकह्योजो
तुमहमकोंपाकरिकेंमोंकोंछुटावो॥ तवश्रीस्वांमिनीजीहसि

केंश्रीवलदेवजीकोंछुडाइकेंश्रीठाकुरजीकेंपासवेगए॥ पा
छेंअष्टसखाश्रीदामग्वालमधुमंगलआदिसखालवनकों
सखीसवपकरिकेंश्रीस्वांमिनीजीकेंआगेंलेआईं॥ तव
सखनकहीअवहमकोंछुटावो॥ तवआपुनीसाखिनसोंश्री
स्वांमिनीजीनेंकहीजोयेसगरे॥ सखामधुमंगलआदि
सवगीरहें॥ तातेंइनसखनकूंयाप्रकारवांधों॥ दोइदोइसखा
नकीपागसोंपीनलगाइकेंआछेंवांधो॥ सोश्रीस्वांमिनी
जीतोसखनकेंवंधाइवेमेंलागी॥ औरइहांश्रीवलदेवजी
श्रीठाकुरजीकोंगोदमेंलेकेंनाजेसोएकमहासघननि
कुंजकोकिलावनहोतहांपधारे तवललिताविसाखाश्री
चंद्रावलीजीआदिअपनीसखीतहांतारवकेंश्रीस्वांमि
नीजीसोंनजरवचाइकेंसवसखीश्रीठाकुरजीपासआ
इसेंनहींमेंश्रीठाकुरजीसोंविनतीकरीजोहमपरकृपा
करिकेंश्रीवलदेवजीकोंइहांतेंटारिकेंहमारेमनोर्थपू
र्णकरों॥ एसोसमयहमकोंफेरिनमिलेगो॥ तवश्रीठाकु
रजीश्रीवलदेवजीसोंकह्योजोएकसखाश्रीरेवतीजी।

होरी कीसाडीषेंचतहें॥ तबलालितानेंकहीमेंअबहीदारखिकेंआरी
१३८ हों॥ एकग्वालश्रीरेवतीजीकीसाडीउतारतहे॥ अनेंकभांति
कीहांसीमसकरीकरतहें॥ सोश्रीरेवतीजीबहुतलाजक
रिडुबीहें॥ सोमोंसोंकहीजोश्रीबलदेवजीआवेंतोछुडा
वें॥ तातेमेंतुमकोंलेनांइहीपोहें॥ तबश्रीठाकुरजीकहेजो
दाऊजीबेगिजाइकेंश्रीरेवतीजीकोंछुडाइलेउ॥ तबश्री
बलदेवजीश्रीरेवतीजीकोंछुडावनगये॥ इहांश्रीचंद्रा
वलीजीलालिताविसाखाश्यांमलाआदिपरमआतु
रहोइश्रीठाकुरजीकेहस्तपकरिचरनछूईकेंविनतीकरी
जोआजुहमारोसमयबन्योहें॥ तातें[illegible]मनो[illegible]
करो॥ तबश्रीठाकुरजीसबसखीश्रीस्वा[illegible]जीप्रति[illegible]
पधारिकेंसबनकेमनोर्थपूरनकरनलागे॥ इहांमधुमं
गलनेंश्रीस्वांमिनीजीसोंकहीजोतुंमतोसपनकेबांधि
बेमेंलगीहो॥ परंतुश्रीठाकुरजीकहांगए॥ तातेंमोंकूंछो
डोतोमेंतुमकोंश्रीठाकुरजीकोंमिलाऊं॥ पहसुनिकेंपा
छेकूंश्रीस्वांमिनीजीदेखेंतोश्रीठाकुरजीश्रीबलदेवजी

दाऊनांहीहें॥ औरश्रीचंद्रावलीजीलालिताविसाखाश्यांम
लाआदिकोऊनांहीहें॥ तबलालिताविसाखाकीसखीह
तीतिनसोंपूछीजोतुम्हींस्वामिनीकहांगईहे॥ तबउनने १
कहीहमकोंतोठीकनांहीहे हमतोइहांतुम्हारेपासहें॥ त
बश्रीस्वांमिनीजीमधुमंगलआदिसबसखनकोंछोड
[illegible]कीसामिग्रीभखनबसनदेकेंकहीजो॥ इह
कपटीबडोछैलाहे॥ ताकोंतुमबेगहीबतावोसाखिनसाहे
[illegible]कहांगयोहे॥ तबमधुमंगलश्रीस्वामिनीजीकोंपधि
रायकें[illegible]साखिनसहितश्रीठाकुरजीहुतेतहांलेजा
[illegible]कुंजकीआडमेंठाढीकरिआपुसरकिआयो॥ पह
लीलादेखनकीमेरीसंकतानांहीहें॥ सोश्रीस्वामिनीजी
देखेंतोश्रीठाकुरजीसाखिनसोंगलबांहीदीयेंपरस्पर
नांनांप्रकारकेहास्यविनोदकरतहें॥ तबयहदेखिकेंश्री
स्वांमिनीजीसोंसह्योनगयोसोलालिताकीआडमेंम
धपकेंपाछेंतेंदोरिकेंजाइकेंश्रीठाकुरजीकीफेंटपकरि
केंक्रोधसहितअनेंकवचनकहेजोअरेकपटीतूंपाहीला
यकहे॥ तूंमेरेआगेंनित्यहीकूंठीसोंहखातहे॥ आजुतुम्हा

हारी- रीदोऊनकीचोरीमेंहूंबहुतदिनमेंपकरीहें ॥ यहसुनतही
१३९ सखीसबसोचकरिकेंन्यारीन्यारीगढीहोइरही ॥ श्रीठा
कुरजीलाजपाइनीचीद्रष्टिकरिसबसखीनकीदिसा
देखिकेंसैनहीमेंकहेजोमोबिनाबिचारेंतुम्हारोकह्योक
र्यो ॥ तातेंहमकोंतुमकोंदोनोंनकोंकम्मिनपरी ॥ पाछें
श्रीस्वामिनीजीअनेकवचनअनेकप्रकारकेंउराहने
केकहिकेंक्रोधसहितकरिकेंमानकीयोजोअबतुम
सोंकबहूंनबोलोंगीऐसेंकहिकेंमानमंदिरमेंपधारी
तबश्रीठाकुरजीललिताविसाखासोंकहेजोतुमकछो
विचारकरोतासोंमानछूटे ॥ तबललिताविसाखा
पुनांनांप्रकारकेकोटिउपाइकीये ॥ परंतुरंचकहूमानन
छूट्यो ॥ तबललिताविसाखाहारिकें ॥ श्रीठाकुरजीके
पासआइकेंकहीजोहमतोअपुनीबुधिअनुसारअ
नेकउपायकीये ॥ परंतुआजुमानमहागाढोकीयो
हे ॥ सोकाहूंनछूटतनाहीहे ॥ तातेंआपपधारिकेंको
ऊजतनकरोतोमानछूटे ॥ तबश्रीठाकुरजीसुंदरसषी
कोभेखकरिबिजनांहाथमेंलेंश्रीस्वामिनीजीकेपा

छेंबेठे ॥ तबललिताश्रीस्वामिनीजीकेसन्मुखजाइकेंवी
नतीकरीजो ॥ हेप्यारीजूतुम्हारेदरसनबिनागिरधरलाल
बहुतदुखीहें ॥ यातेंतुमचलिकेंअपनेप्राननाथकोंसुख
देउ तबश्रीस्वामिनीजीनेंकहीजोअरीललितातूमेरेआ
गेंउहस्यामकपटीकोनाममतिलेइ ॥ मेंस्यामरंगहूअ
बनीलांबरछोड्यो ॥ औरअंजनहूनदेउंगी ॥ स्यांमकंचु
कीहूनपहिरोंगी ॥ वनकोभंवरकोनदेखोंगी ॥ कोकिलाकेसब्द
कोअबनकबहूंसोनसुनोंगीमृगमदकबहूंनलगाऊंगी ॥ मरक
तमनिकअबमेंकबहूंनपहिरोंगी ॥ नीलकमलकबहूंनक
रसोंनछूवोंगी ॥ तातेंतुमस्यामकोंनाममतमेरेआगेंमा
तिलेहु ॥ तबललितानेंकहीतुमकहास्यामरंगतेंन्या
रीहो ॥ नकवेसरकेंरतहो ॥ परंतुउहस्यांमरंगऐसोहे ॥ ता
कोंलगतहें ॥ ताकोंछोउतनाहीहें ॥ अजुहूतुम्हारेपीछें
लागिरह्योहे ॥ यहसुनिकेंश्रीस्वामिनीजीचाल्हितहोइ ॥
पीछेंकोंदेषीसोताहीसमयश्रीठाकुरजीनेंहांसदीयो
तबतत्कालश्रीस्वामिनीजीकोमानछूटिगयो ॥ सोआ

होरी पहूंहांसिरीयो॥ तबश्रीठाकुरजीअपनेंहृदयमेंआलिंगन
२४ देंअपनेंअंकमेंलेकेंबिराजे॥ तबललिताआदिनांना
प्रकारकीसामिग्रीदोऊस्वरूपकोंअरोगाई॥ पाछेंको
किलाबनमेंनानाप्रकारकेकौतुककरिकेंरीतविपरीतर
मनकीएहे॥ सखीजनजालरंध्रह्वेकेंनानाप्रकारकीली
लाकोअवलोकनकरतहें॥ यहलीलाअत्यंतगोप्यहे॥ ता
तेंरसि[redacted]कजनाविचारविचारिकेंहृदयमेंअनुभवक
रिकेंरसकोपानकरतहें॥ तातेंयाबनकोनामकोकिला
बनहे॥ फागुनवदि॥ ७॥ कोंश्रीनाथजीकोंपालनाउछव
ताकोभावयहहे॥ प्रथमलीलाजहांनित्यहे॥ तहांप्रथम
श्रीचंद्रावलीजीकेघर॥ फागुनवदि॥ ७॥ कोंश्रीजीप
धारेहें॥ ताहीभावसोंश्रीगुसांईजीकेअवतारलीला
हे॥ तहांश्रीगुसांईजीश्रीचंद्रावलीजीकोस्वरूपहें॥ प
रंतुअबजगतमेंप्रगटविप्ररूपहे॥ तातेंमहाभावभीत
रकोगोप्यकरनार्थहे॥ म्लेछकोभयपरबतपरकराय
कें॥ फागुनवदि॥ ७॥ कोदिनश्रीनाथजीश्रीगुसांईजी

केघरमथुरापधारे॥ ताकोयहकीर्तनहे॥ रह्योमोहिश्री
बल्लभग्राहिभावे॥ ताकोअभिप्राययहहे॥ जोघरधनी
घरनहोय॥ औरतहांजायकेंरहनोंभोजनकरनो॥ यह
अत्यंतसनेहकोलक्षनहे॥ तातेंश्रीगुसांईजीकोंबुला
इबेकीअपेक्षानराखीअपनोघरजानिकेंपधारे॥ अ
थदूसरोभावकहतहें॥ जोश्रीगुसांईजीघरहोंइतोश्री
गोकुलघरघरपधारेंघरजानिमहाप्रेमरआनंदसों
सब्रजवल्लभावद्धूटिजाइ॥ श्रीचंद्रावलीजीरूपप्रग
टसबकेआगेहोइ॥ यहरसकाहूकोजताइबेकोजोग्य
नाहीहे॥ ताकेलीयेंश्रीगुसांईजीपरदेसहुतेतबपधा
रे॥ औरभावात्मकश्रीचंद्रावलीजीकोसरूपतोश्रीगो
वरधनधरपासअहरनिसलीलाकरतहें॥ सोश्रीजी
के[illegible]संगहीअपनेंघरपधारिकेंनानाप्रकारकीसामि
ग्रीअरोगाई॥ मुख्य[illegible]सामिग्रीतादिनजलेबीहें॥ श्रीचं
द्रावलीजीकोअधरामृतरूप॥ तातेंश्रीगुसांईजीके
उत्सवमेंमुख्यहें॥ तादिनकेसरीकुलहकेसरीबागो

होरी
२५१

धारनकरे ॥ याकोयहअभिप्रायजाननो श्रीचंद्रावलीजीने
अपनीकुंजमेंजुगलस्वरूपपधारेहें ॥ तातेंश्रीगुसांई
जीकेघरहोइजुगलस्वरूपसोंपधारेहें ॥ औरोंजूथ
पतिश्रीस्वामिनीजीसमाजसहित ॥ तातेंसबव्रजके
व्रज ॥ मीगोसाक ॥ तीनकूंडआदिधरतहे ॥ औरअन
सखीकूंडीमेंमेवातीसेवकलडुवावीसकरधराए चारों
केनावात्मकहें ॥ जेसेंडजोरापनी पूंन्योंकोदिनमीगेंक
चोरीश्रीस्वामिनीजीकेकपोलकेभावतेंहें ॥ पूंन्योंकोचं
द्रमांआकारहे ॥ औरफागुनवदि ॥ ७ ॥ केदिनश्रीगुसां
ईजीश्रीगोकुलवासकरतेहें ॥ औरताहीदिनश्रीनवनीत
प्रियाजीकेमंदिरकीनीमरात्रिकोखाडीहें ॥ यादेवेंद्र
दासने ॥ औरताहीदिनश्रीगोकुलचंद्रमाजीश्रीगुसां
ईजीकेघरपधारेहें ॥ श्रीरघुनाथजीकेलीये ॥ श्रीगो
वरधनधरश्रीगुसांईजीकेपास ॥ श्रीनवनीतप्रियाजी
श्रीआचार्यजीरूप ॥ नित्यसिधांकेभावसोंसदांवृंदा
वनमेंहें ॥ श्रुतिरूपाकुंमारिकाकेभावसोंपरकीनतयाउ

त्सवकेदिनघरमेंरहतहें ॥ याप्रकारअनेकभावहृदेकअप
नेमनोर्थकरतहें ॥ सप्तमीकेदिनपधारे ॥ ताकोयहभावहे ॥
दयधमेसंयुत्तधर्मीसकेलीलाविसिष्ट पुष्टि
मार्गमेहें ॥ जोउत्सवकीसामिग्रीवाजंत्रगानादिकअ
नेककूतूहलवीर्यहेजोयाकलकालमेंसर्वदोषकोंदा
पुष्टिमार्गडाकेपरलीलाप्रगटकीए ॥ एसेमायाअनेक
मायावादिनकेमतकोखंडनकरिनातिमार्गकोस्थापन
श्रीजीगोवर्धनधरसातमंदिरआदिपुष्टिमारगकी
सुदृष्टिसाक्षातकोटिकंदर्पतेंसुंदरदर्सन ॥ ग्यानयहजूव
नेसखडीप्रसादी ॥ अनप्रसादी खासामरजादकोसेवकीआ
दिकोग्यानविचारभगवदस्वरूपहजभक्तनकेभावात्म
कसारपुष्टपुरुषोतमस्वरूपश्रीकृष्णतिनके
स्वरूपकोग्यान,वैराग्ययहजोभगवदसेवाकेआगेंओरध
र्मजपतपसंजमनरधाभातिहुतीपनसर्वसेवाकेपाछें
यहधर्मऔरधर्मीयहजोसगरीसेवाकारपाछेंमनमें
सगरीसेवाकोभावताकीभावनाकरिरसकोअनुभव

होरी मानसीकरनी॥ या भावतेंसप्तमीकोदिनश्रीजीकोउत्सवहे॥
२५२ तादिनराजभोगसमेंयहधमारिगावतहेंधन्यधन्यनं
दजसोमतीधन्यश्रीगोकुलगाम॥ धन्यकुंवरदोऊलाडि
लेवल्लमोहनजाकोनाम॥ ८॥ याधमारिमेंआगेयहहे॥ भे
खबिचित्रवनायपयोयहभूखनवसनसिंगार॥ निजमंद
रतेंसाजिचलेबालकवलवनवारिगिरवरधरस्तरसभ
रेहोमुरलीमधुरवजाय॥ इत्यादिकभावरूपकेसिंगारक
रिनिजमंदिरागीरराजतेंश्रीगुसांईजीकेघरपधारिके
अनेकविहारआदिकश्रीचंद्रावलीजीकुंजमेंकरसासो
भारमॉकेमुरलीवजाइसगरेव्रजकीवधूबुलायपाछेंहो
रीखेले॥ तातेंपुष्टिमार्गमेंयहरीतहे॥ जवश्री[illegible]जीके
राजभोगआवें॥ तवहोरीखेलेंश्रीजीश्री[illegible]मिनीजीश्री
चंद्रावलीजीसाहितनिकुंजमे॥ पीछेंराजभोगसरेंतवस
गरेव्रजजनभक्तनसहितहोरीखेले॥ तातें दोइखेलहोतहें॥ गो
विंदस्वामीकीधमारियातेंपहलेंगावतहें॥ श्रीदामासखा
कोप्रागट्यप्रियहें॥ श्रीस्वामिनीजीकेनाई॥ रहस्यलीला

केअहर्निसअनुभवकर्तांपुष्टिरसलीलाकेअनुकूल॥ वृ
खभानजीकेघरतेंपधरायलावनो॥ इहांउहांकेसमाचा
रप्रीतकेवढावनहारे॥ तातेंइनकेकीर्तनतेंश्रीगोवर्धन
धरश्रीस्वामिनीजीवहुतप्रसंनहोतहें॥ तादिनन्योछा
वरिहोतहें॥ सोश्रीचंद्रावलीजीप्यारमेंमोतीकीआरतीसी
[illegible]धारिकेंकीये॥ विरहन्योछावरिकीयेअपनोसर्वांग
मनकों[illegible]रपनकीये॥ ता भावसोंआरतीन्योछावर
होतहे॥ औरअनेकभावहें॥ मनमेंरसिकजनअनुभव
करतहें॥ फागुनसुदि॥ ८॥ कोंहोलाष्टकहें॥ तादिनतें
गोरीभाखानारीखेलहोतहें॥ ताकोंअभिप्रायपहहे॥ ये
तन्मारगीभावनाअनुसारयहहोरीहे॥ सोश्रीस्वामिनी
जीकीहास्योल्लासअनंततरंगनीस्वरूपहें॥ सोश्रीस्वामिनीजी
कीआग्यापायवसंत[illegible]मेंकामकोजन्महे॥ तवयहहो
री[illegible]भीतरप्रगटहोइसगरेलोगनकोंउन्मत्तरसरू
पकरतहें॥ जामेंरात्रिदिनकामसाम्राज्यकपहलीलाहे॥ ता
तेंहोलाष्टककोंकहूनौतनसांमिग्रीअरोगाइये॥ राजभोग

होरी-
१४३

मेंउत्सव मांनयें औार फागुनसुदि ॥ ११ ॥ केदिनकुंजतारि
नश्री अंगऔारषेल नारी ॥ ताको भावयहहे ॥ ग्यारसबा
रसतेरसचौदसयेबारोजूथपातिके मनोरथहे ॥ तामेंप्र
थमकुंजकीग्यारस ॥ तादिनश्रीस्वामिनीजीकोखेलअ
अंगश्रीस्वामिनीजीकरतहें ॥ मुकरबीकाछिनीधार
नकरतहें ॥ सोजेसेंमोरकलाकरिरसदांनकरतहें ॥ तेसेंब्र
जभक्तनकोंजतावतहें ॥ निकुंजकेभावतेंमांनादिकविहार
हे ॥ तातेंयहकीर्तनगोविंदस्वामीको ॥ तेमोहनकोमनह
र्योतातिनरह्योनबाउरीप्यारी ॥ पाछेंतादिनसेंनमेंगु
लालपातेंउडावतहें ॥ जोश्रीस्वामिनीजीकोकुंजमेंसु
गरीरात्रिहोरीरसरूपश्रीजीखेलतहें ॥ याभांतकुंजहे ॥
तादिनतेंडोलकेकीर्तनगावतहें ॥ सोपाछेंजोडोल[illegible]
तरहस्यलीलाहेंडोराकीनांईहे ॥ तातेंकुंजकीग्यारसतें
अत्यंतरहस्यलीलाहे ॥ तातेंडोलगावतहें ॥ औार फागु
नसुदि ॥ १२ ॥ केदिनतेंश्रीयमुनाजीकेभावसोंभारी
खेलहे ॥ सेंनमेंगुलालउडे ॥ डोलगावें ॥ तेरसकेदिनश्रु

तिरूपाश्रीचंद्रावलीजीकेमनोरथतेंखेलतहे ॥ सेंनमेंना
रीगुलालउडे ॥ डोलगावें ॥ कबहूंचोदसकीहोरीहोइ ॥ चोद
सकेदिनकुंमारिकाआदिसबसखीनकेभावतेंखेलें ॥ भा
रीसोंनारीगुलालउडे ॥ डोलगावें ॥ कबहूंचोदसकीहोइ ॥ त होरी
बयहभावनाहे ॥ कुंजकीग्यारसकेदिनश्रीस्वामिनीजीऔा
रश्रीयमुनाजीमिलिखेलें ॥ एकऔारकेंद्वादसीकोंश्रीचं
द्रावलीजीकोखेल ॥ सोमिश्रीश्रीयमुनाजीकेभावकी
ग्यारसकोंराजभोगमेंआरोगें ॥ तेरसकोंकुंमारिकादिस
बस्वामिनीकेभाव ॥ यहभावविचारिकेंचोदसकीहोरीहो
तहे ॥ अबहोरीकोदिनबडोपरबमांनिश्रीस्वामिनीजीअ
अंगश्रीजीकोकरावतहें ॥ तादिनउरदकेबराछाछ
औारसेवतीनकूंजा ॥ मीगसाक ॥ मेवाती ॥ गेंदा ॥ सबके
लडुवा ॥ बूंदीसक्करपारा ॥ आदिसामग्री ॥ खेलबडोस
गरेदिनव्रजमेंखेलें ॥ गोपीग्वालसखाश्रीबलदेवजी
व्रजभक्तसंयुक्त ॥ मातोखेलगारीनिलजताकोंअंगीका
रकीये ॥ पाछेंसेंनमेंमातोखेलखेलकेंलकुटीगाइध

रतहें॥ डोलकोखेल॥ यामेंयहजताईजोलकुटीपुष्टिकाग्र
होरी स्वरूपहे॥ ताकीवेदमर्यादाउलंघनकरिआपनीपुष्टिली
१५५ लाकोस्थापनकीए॥ होरीकेचारपहररात्रिकोचारोंयूथ
पतिस्वामिनीसोंकीजोविहार॥ तातेसेनमेंगुलालउडे॥ औ
रडोलकेकीर्तनगावें॥ होरीकीरात्रिकोंहोरीमंगलेत
वा रमेंश्रीआदिदारिकेंगुलालअबीरसोंपूजनकरतहें॥ ता
कोभावयहहे॥ श्रीस्वामिनीजीओरश्रीठाकुरजीकोब्या
हहे॥ सोसखीजनकरतहें॥ तातेगारीब्याहकीसाखोचा
रभावात्मकश्रुतिकीरीचाश्रुतिरूपाकहतहें॥ कुंजमंदिर
सोईब्याहकोमंडप॥ गांगदेऊनकीलालीजीगोरहें॥
ब्याहमेंहोमअग्यारी॥ सोहोरीकीपूजाजानोंसाक्षात
पूर्णपुरुषोत्तमकोब्याहजानिकेंआए॥ मायामेंतेयहो
तहें॥ याभावतेंसगरीरात्रिकुंजमेंखेले॥ तातेमातोष
लकहतहें॥ पाछेंदूसरेदिनडोलसोअत्यंतलीलाहे॥
औरमहाभावनाजोपरिवाद्योजतें [blot] श्रीवृखभानजी
श्रीठाकुरजीकोन्योतोकरतहें॥ अबहीब्याहप्रसिधनांहीं

भयो॥ परंतु मनमेंश्रीस्वामिनीजीकोवरश्रीठाकुरजीकों
निश्चयकररारख्योहे॥ तातेंभावकरिकेंअपनेजमाईजानि
केंघरबुलायनानांप्रकारकीसामग्रीआरोगावतहें॥ गु
लालअबीरादिकरिकेंतिलकआरतीभेटकरिनंदालय
मेंपरस्परपधारतहें॥ यहभावनाकरनी॥ अथवाहो
रीकेदिनकीर्तजीवृखभानजीअपनेभावात्मकसंबंधी
जसोदाजीश्रीनंदरायजीकोंजानिकेंश्रीठाकुरजीकेहोरी
खेलनकीसामग्रीगुलालअबीरकेसरिचोवापिचका
रीतथाअन्नमखनवस्त्रसखानिकेहाथतबकडीटोकरी
साजके॥ अनेकबाजेसहितहास्यनवेदधुनिकरततव
नंदालयमेंपगावतहें॥ सोश्रीयसोदाजीद्वारपरआइ॥
साखनसहितप्रीतपूर्वकवधावतहें॥ बरसानेतेंनंदगां
वबृखभानजीकोप्रोहितआयो॥ इत्यादिकभावविचारनो
अथवायहीभावसोंयसोदाजीहूमनमेंविचारनिश्च
करतहें॥ जोमेरेपुत्र [blot] कीसगाईकीरतजीकीबेटीसोंहो
इ॥ यहभावजानिकेंहोरीकेदिनलहंगासारीचोलीका

जरवेंहीसिंदूरआभूषनवस्त्रअनेकप्रकारकेगुलाल
अबीर॥ नानाप्रकारकीसामिग्रीमेवामिठाईसखिन
संगअनेकवाजिंत्रब्राह्मनवेदध्वनिकरत ब्रजभांनजी
केघरमेंपगधारतहें॥ सोजवसमाजसहितब्रजभांनपु
रामेंआवतहें॥ तवकीरतजीद्वारपरसखिनसहितआ
इकेंभावपूर्वकअपनेघरमेंपधरायकेंसवमिलिकेंहोरी
खेलतहें॥ तहांश्रीनंदरायजीकेब्राह्मनकूंअनेकभांत
सोंव्हिरयकेकेंनचावतहें॥ मापस्केभावतेंविचारलोगन
इगांवकोपांडेब्रजवरसानेंआयो॥ इत्यादिक [illegible] अनेक
नेकप्रकारहें॥ यहहोरीहास्यस्वरूप [illegible]॥ ताकोभाव
यहे॥ जोचारोवरनआश्रमसवके [illegible] ब्राह्मनक्ष
त्रीवैस्यसूद्र॥ ग्रहस्तवानप्रस्तसंन्यासी॥ ब्रह्मचारी
तपेस्वरीजतीमुनीग्यांनी॥ पंडितसवकेग्यानकोहर
लीयो॥ तातेंब्रजकीहोरीसर्वोपरआत्मकरहस्यली
लारसिकजनहें॥ तिनकोजीवनहें॥ तातेंब्रजचोरासी
कोसमेंकामसाखपुकलीलारससाखमेंचोरासीआ

सनहें॥ याभावतेंब्रजसगरोरसस्वरूपहें॥ तातेंदेवताआदि
याब्रजकीरजकेकनिकाकोंवांछनांकरतहें॥ तोऊश्री
आचार्यजीश्रीगुसांईजीकीकृपाविनांब्रजकीलीलाको
अनुभवरसकोग्यांननहोइ॥ औरहोरीमेंअनेकस्वांग
[illegible]नीडगंवरजोगीकेस्वांगवनांवतहें॥ सोऊभाव
[illegible]लीलाहे॥ कवहूंश्रीठाकुरजीवनतहें॥ कवहूंसखिन
कोंवनावतहें॥ कवहूंश्रीस्वामिनीजीकीसखीवनतहें॥
लीलाहोऊनकोमिलापसिधकरनार्थ॥ तथाहोरीमेंराष
ऊडावतहें॥ तामेंयहहे॥ लौकिकजोगनीआगमउद्धारत
हें॥ भयानकस्वरूपहास्यस्वरूपासक्त॥ अलौकिकजोगनीदो
ऊस्वरूप॥ कुंजनमेंक्रीडाकरें॥ तातेंप्रतिबंधस्वरूपमर्यादा
गोपगुरजनकोंभयानकस्वरूपआगमनादिखाइरसकोगो
पनकरावतहें॥ इत्यादिकरासमेंमसालस्वरूपहें॥ अनेकभां
वनाकेप्रकारहें॥ इतिश्रीहरिराइजीकृतवसंतहोरीकीभा
वनासंपूर्ण॥ अथडोलउत्सवकीभावनालिखतेंसोडो
लमेंदोयप्रकारकोभावहे॥ एकश्रीनंदरायजीश्रीयसोदाजी

होरी· अपने वात्सल्यभावसों अपने पुत्रकों डोल कुलावत हें ॥
२५६ और एक निकुंजमें तहां आदि श्री वृंदावन श्री गोवरध
नकी तरहटी में ॥ तहां सदाई वसंत ऋतु होइ रही है ॥ सुंद
र कुरनां गिरराज तें झरत हें ॥ अमृत हू तें उत्तम जल सीत
ल मधुरता करि लता द्रुम वेली अनेक वन सब हरित पु
ष्प फल संयुक्त भार करिकें धरती सों नई कें अपने भक्त
जो भगवांन हें ॥ तिनकों नमस्कार करत हें ॥ यह व्रज श्री वृं
दावन श्री गोवरधन श्री यमुनाजी ॥ श्री गोकुलजी संबंधी
जितनी वस्तु हें ॥ तिन सबनके भोक्ता तुम ही हो ॥ तुम्हारे जो
ग्य हें ॥ सर्व पदार्थ हें ॥ अति अलौकिक वस्तु यह हें ॥ ता तें मा
रे पुष्प फलकों आइकें अंगीकार रसदान करत हो ॥ सो ह
मारो बडो भाग्य हें ॥ परंतु हमारी सर्वांग देहकों अंगीकार
करो ॥ तब श्री ठाकुरजी श्री वृंदावन श्री गोवरधनके आगे
आपतें ॥ श्रीजी डोलउत्सवके मिस करिकें सबनकों अंगी
कार कीए ॥ काहे तें ब्रह्मादिक वनां सें पती हें ॥ सो परम भ
गवदीय सब गिरराजके हें ॥ ताहूं में वे गिरराजके हें ॥ सो पुष्टिमा

र्गीय भगवदी हे ॥ केवल श्री पूर्णपुरुषोत्तमकी लीला संबंधी
ता तें श्री पूर्णपुरुषोत्तमको यह नांम हे ॥ भक्तमनोरथपूरकाय
नमः ॥ सो ऐसे मनोरथ भगवदीयको जांनियो तब तिनके ऊ
पर श्री गोवरधनधर डोलको उत्सव करत भए ॥ तहां यह
आसंका होइ जो भगवदी होइकें श्री ठाकुरजी सों कछू मनो
रथकी प्रार्थनां करें नांही ॥ अपने सुखके लीये ॥ श्री पूर्णपु
रुषोत्तमसों प्रार्थनां करें ॥ सो मुख्य पुष्टिमार्गीय भगवदी
नांही ॥ तो तुम इहां कहे जो श्री वृंदावन गिरराजके भगवदी
सब ॥ सनें आपुस सर्वांग अंगीकारके लीये श्री पूर्णपुरु
षोत्तमसों प्रार्थनां कीए ॥ यह मुख्यमार्गमें कैसे संभवे
यह संदेह होइ ॥ तहां कहत हें ॥ जो व्रजभक्त हें ॥ तथा व्रजसंबंधी
वृक्षादिक भगवदीय हें ॥ सो प्रार्थनां अपने सुखार्थ नांही ॥
करत हें ॥ काहे तें गोपीजन श्री पूर्णपुरुषोत्तम याकों नांना
प्रकारकी सामिग्री आभरण वस्त्र अनेक प्रकारके विन
ती प्रार्थनां करिकें अंगीकार करावत हें ॥ सो केवल प्रभुके
सुखके अर्थ ॥ अपने सुखके अर्थ नांहीं ॥ ते सें ही व्रजके
ही

डोल- श्रीवृंदावनके ॥ श्रीगोकुलके ॥ श्रीगिरराजके वृक्षादिक
१५७ हैं ॥ सोपुष्टिमार्गीपनमें भगवदीहैं श्रीपूरण पुरुषोतम
की लीलातारसकोहस्यकरनहारेहैं ॥ उद्दीपन भाव कौ जा
रसमेंसंबंधीहैं सोयप्रकारकीलीलाव्रजमेंहै ॥ उद्दीपन
भाव ॥ दूसरो आलंबन भाव ॥ वामें रसक्रीडामोंजितनो
उद्दीपन भाव विसेषनितनडी नईरचनाहोइ ॥ त्योंत्यों आ
लंबन क्रीडाकी रसकी पुष्टिहोइ जैसे रौद्ररसहै ॥ हास्यरससो
विहाररसकी वृधिहोइ ॥ विहाररस सो लजाकी वृधिहोइ ॥
तातें उद्दीपनके भावके अर्थ व्रजके वृक्षनकोभा[illegible]श्री
पूर्णपुरुषोतमके हृदयके भावनिप्रा[illegible]मनोरथ [illegible]
कीये ॥ तातें श्रीपूर्णपुरुषोतम प्रसंनहोइ ॥ डोलउत्सवगि
रराजपरकीए ॥ तहां यह संदेहहोइ जो श्रीगो[illegible]में ग्वा
ललीलाहै ॥ सो डोलको उत्सवकैसें संभवे ॥ कैसा प्रली
लामें प्रसिधहीहैं ॥ तातें डोलकी रचनामें तो केवलरह
स्यलीलाहै ॥ तहां जामें श्रीवलदेवजी सखागोपनको
मिकरसंभवेनांही ॥ तातें श्रीगोकुलमें डोलको अभा
वकैसेहैं ॥ औरगिरराजमें कौनप्रकारहै ॥ यहसंदेहहोइ ॥ त
हां कहतहैं ॥ डोलकीलीलाहै ॥ सोपरमरहस्यहै ॥ जैसेंहिंडोरा
हूमें श्रीवलदेवजी सखागोपनसों छिपाइकेहैं ॥ तहां श्रीगो
कुलमें याप्रकारहै ॥ श्रीयसोदाजी अपने मनोरथकेवात्स
ल्यरससों डोलरचनां अपनेघरमें भीतरजहांकाहूकीग
म्यनांहीहै ॥ सोसोरह हजार अग्निकुमारिकाहें ॥ तिनसों
साधकराइ ॥ तथा व्रजसंबंधी श्रीस्वामिनीजी श्रीचंद्राव
लीजी ललिताप्रभृति इनहूंको मुग्धभावदेखिकें श्रीय
सोदाजीनेंकही ॥ तुमहूंमिलिकें डोलरचनांकरो ॥ ऐसोपे
लककोजोहोरीके खेलदसादिनपाछेंआवेंगे ॥ सोमेरे
पुत्रकोहोरीकीलीलासोमनभरिआइ ॥ तबकुमारिकाश्री
स्वामिनीजी श्रीचंद्रावलीजी ललिताप्रभृतिसबबहुत
प्रसंनहोइमनमेंकहीजो ॥ नित्यहोरीकेखेलमेंगोपस
खागुरुजनके आगेंहमारोमनोरथपूर्णहोतनांहीहै आज
बडीवातभईसोश्रीयसोदाजीकेमनमेंएकांतलिलाय
वेकीआईहैं ॥ तातें आजहमारोमनोरथपूर्णहोइगो ॥ तवह

डोल॰ जकीसकलस्वांमिनीकुंमारिकाललिताविसाखाप्रभृति
२५८ सबसांमिग्रीसिधकरी॥ केलाकेखंभआंबकीडारमा
धुरीकीलताअनेकपत्रबन्यादि॥ औरअनेकफूलफल
सुंदरनंदालयमेंकुंजकीरचनांकरतभई॥ तबश्रीयसोदा
जीबडेबडेमुनिनकोंमहूरतपूछे॥ सोउत्तराफालगुनीके
नक्षत्रमेंडोलधराए॥ तातेयाकोआसययहहेजो॥ उत्तरा
यातेंकहेहें॥ जोफागुनउतरयो॥ चैत्रकोआगमलग्यो औ
रसगरेफागुनकोफलरूपयहडोलउत्सवहे॥ उत्तराफा
लगुनीकहतहें॥ औरसास्त्रमेंवसंतऋतुकेदोउमहीना
कहेहें॥ फागुनचैत्र॥ सोफागुनमेंउदीपनअनेकखेल
हस्यविनोद॥ औरचैत्रमेंआलंबनकुंजरचना॥ नातेफूल
मंडलीपुष्टिमारगमेंहोतहे॥ याभावतेउत्तरानक्षत्र
कोडोलकोंअंगीकारकीए॥ सोनंदालयमेंजेसेहिंडो
राप्यातेसेंहीडोलरचनांकीए॥ हिंडोरनांहोरप्रान
दरवास॥ हारकोडोलदारविब्रजवासीफूले॥ पहनंदाल
यकोडोलसोमुग्धभावसोंश्रीयसोदाजीश्रीठाकुरजी

कोंअपनेंबालकजांनिऔरश्रीस्वांमिनीजीकोंकुंमारीजां
निडोलझुलावतहें॥ तथापालभावसोंश्रीठाकुरजीहमक
रिकेंमुग्धभावसोंकहतहें॥ हेमैयामेंयहसखानकीबे
टीकेसंगडोलझूलूंगो॥ औरमेंखेलोंगो॥ तबश्रीयसो
दाजीअत्यंतमुग्धबालकजांनिमनमेंप्रसन्नहोइकेंदो
उस्वरूपकोसिंगारकरिकेंडोलउत्सवकीरचनांकरतहें॥
तहांतेमायाश्रीचंद्रावलीजीऔरललिताजीहूकस
तीहें॥ सोअपनेंअपनेंग्रहतेंसिंगारकरिश्रीयसोदाजी
पासआइकेंप्रार्थनांकरतहें॥ हेश्रीयसोदाजीअपनेंपु
त्रकोदरसनकरावो॥ तबश्रीयसोदाजीब्रजभक्तनकोंनि
ष्कारसनेहजांनिसबनपरप्रसंनहोइअपनेंपुत्रकोंब्रज
भक्तनकोंसोंपतहेंजो॥ तुममेरेपुत्रकोंझोलादिझुलाइकें
नानांप्रकारकीसांमिग्रीअरोगाइकेंरक्षाकीजो॥ या
प्रकारसगरेब्रजभक्तनकोंमनोरथसिधहोतहें॥ अपनें
अपनेंग्रहतेंअनेकप्रकारकीसांमिग्रीलावतहें॥ सोश्री
यसोदाजीकीसांमिग्रीमिलाइप्रभुकोंअंगीकारकरा

गोल. वतहें॥ अथवासोरहहजारअग्निकुंमारिकाहें॥ तिनमेंमु
ख्यजतकहें॥ तिनमेंश्रीस्वांमिनीजीकोआवेसहे॥ तातेंइनहूं
२४९ कोनामश्रीराधाहें॥ औरमुख्यसहचरीश्रीस्वांमिनीजीकी
हें॥ इनकेहृदयमेंवोविकेंश्रीस्वांमिनीजीसर्वपदार्थकोभो
गकरतहें॥ जैसेंमथुराकेस्वरूपकेभीतरव्रजभक्तनकोभा
वात्मकस्वरूपहें॥ सोमथुराकेकृपात्मकस्वरूपकेभीत
रहोंइ॥ सर्वभोगव्रजभक्तनकोंसांमिग्रीकरतहें॥ औरदु
ष्टकंससंबंधीराक्षसनकोंमारनआदिअनेकमर्याद
संयुक्तलीलासैंवेमथुराकेसंबंधीस्वरूपकृपा[illegible]सो
सरूपवेदअगम्यअमर्यादलीलाकरतहें॥ यहभाव[illegible]
चारनो॥ तातेंनंदालयमेंअग्निकुंमारिसोरहहजारमेंम
खिपासोश्रीठाकुरजीकेसंगडोलफूलतहें॥ सो[illegible]
दाजीकोंयाभावकीखवरनाहींहें॥ श्रीयसोदाजीयहजां
नतहें॥ जोमेरेंसोरहहजारवालककेंन्याहें॥ सोमेरेंपुत्रकों
खिलायकेंनीकेंराखतहें॥ काहेतेंकुंमारिकाश्रीठाकु
रजीसोंदोयवरसवडीहें॥ तातेंश्रीयसोदाजीअपनेंपुत्रके
रक्षार्थइनकुंमारिकानकोंवहतहीआछीभांतिराख

तहें॥ तैसेंहीप्रीतिसाहितकुमारिकाश्रीठाकुरजीकीरक्षा
करतहें॥ काहेतेंयेकुंमारिकासर्वभगवद्भावरूपसामर्थहें॥
तातेंश्रीनंदरायजीगोडदेसतेंपूर्वदिसातेंसोरहहजारकुं
न्यालाएहें॥ जोकंसराजाकोंदेकेंप्रसंनराखेंगे॥ सोवेतो
समारीभगवद्भोगसांमिग्री॥ तातेंश्रीनंदरायजीकेग्रह
मेंवेरहिगईं॥ सोनित्यविहारश्रीठाकुरजीसोंओरकुंमा
रिकानसोंहोंनलाग्यो॥ सोयहरहस्यलीलाकोग्यानश्रीन
यसोदाजीकोंनांहींहो॥ काहेतेंवेवात्सल्यरसमेंमग्नहें॥
तातेंकुंमारिकाहूश्रीठाकुरजीकेसंगडोलफूलतहें॥ तातेंव्र
जभोगसाहित॥ चारिभोगओरचारखेलसोचारोंस्वांमिनी
नकेमनोरथतें॥ नित्यलीलामेंतोकोट्यांनकोटिभोगअ
नेकस्वांमिनीकोंअनेकप्रकारकेभावतेंश्रीठाकुरजीआ
रोगतहें॥ ताकोपारनांहीं॥ तातेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभू
नकेपुष्टिमारगमेंसर्वव्रजभक्तनकीरीतकीसेवाहें॥ तातें
पुष्टिमार्गकहतहें॥ तामेंकोट्यांनकोटिजूथपतिस्वांमिनी
व्रजमें॥ तिनहूमेंचारोजूथपतिमुख्यहें॥ सोचारोंकेभावतें

डोल
४५

सगरी सबरी तऊ सब को प्रगट प्रकार कीए ॥ जामें व्रजसंबं
धी सबें स्वामिनी को भाव सिध हे ॥ ताते राजभोग साहित चा
र जोग और चार खेल चारों के भाव तें होत हे ॥ या प्रकार श्री
गोकुल को डोल सानो सरूप को नंदालय में हे ॥ अपवा दूस
रो भाव यह हे जो श्री गकुल जी होरी की रात्रि श्री स्वामिनी
जी सों होरी खेल के रस परवस भए ॥ देहानुसंधान छूट
गयो ॥ ताते भोर जैये श्री यसोदा जी श्री गकुल जी को मुख
चुंबन करि पूछे ॥ यो बकुलेंह लेंह ॥ तब श्री गकुल जी कहे मै
या होरी यही व्रजगान के सीत तब श्री यसोदा जी श्री नंदरा
य जी सों कही जो पुत्र होरी में बावरो भयो अब कहा करिये
तब ललिता आदि श्री स्वामिनी जी सों पूछे ॥ तब यह विचा
र कीये जो इन्ने होरी को खेल करि इनको मन बाहर
कारिये ॥ तब डोल उत्सव को आरंभ करि डोल पर पधरा
ए ॥ ताते अभ्यंग भाव सो नाही हे जो प्रभू को देहानुसंधा
न नाही अभ्यंग के सो ॥ तब प्रथम खेल में थोरो सो खिलाय
कों ने आयो ॥ तब यसोदा जी कहे कछू आरोगो तो फेर खे

के संग

लाऊं ॥ या प्रकार तीन बार खिलाए ॥ तीनों बार आरोगायके
कहे अब आछी भांति आरोगोगे तो भलें खिलावें ॥ तब षडे
भोग में सर्व भक्तन को मनोरथ सहित प्रभू कों आरोगाए
पाछें भारी खेल कीए ॥ ऐसो होरी में कबहू नाही भयो हे तब
श्री गकुल जी बहुत प्रसंन भए ॥ सो श्री यसोदा जी अपने पु
त्र को प्रसंन देखके सबन को मेवा मिठाई वस्त्र भूखन दे
दिवाए ॥ आरती न्योछावर कीए ॥ पाछें अपने निज के मंदि
र में पधराय स्नान कराय दूसरो सिंगार कीयो ॥ व्हां गोपन कों
बुलायके यह कहे जो अबीर गुलाल सब धोयके स्वच्छ करो
कहूं मेरो पुत्र देखेगो तो होरी की सामिग्री तो फेर हमकूं रे
गो ॥ अनेक जतन तें याको आछो कीयो हे ॥ यह भाव हे ॥
सो अपने मन में बिचारनो ॥ और श्री गोवरधन वृंदावन
उहां श्री गोवरधननाथ जी को डोल मुख्य हे ॥ काहे तें जहां
रहस्य लीला को या तरह में सदा अष्ट प्रहर हे ॥ श्री स्वामि
नी जी के संग सगरी लीला करत हे ॥ तहां श्री स्वामिनी जी
सों और कुंमारिका को संबंध या प्रकार सो होत हे ॥ श्री पै